

हरिभूमि सिरसा-फतेहाबाद भूमि

रोहतक, रविवार 23 अगस्त 2026

खबर संक्षेप

भाखड़ा नहर में डूबने से छात्र की मौत
फतेहाबाद। जिले के भूना क्षेत्र में एक हृदयविकारक हादसा सामने आया है, जहां 16 वर्षीय छात्र की भाखड़ा नहर में डूबने से संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। मृतक छात्र का शव नहर में तैरता हुआ गांव सालमखड़ा के पास से बरामद किया गया। शनिवार को शव का पोस्टमार्टम नागरिक अस्पताल फतेहाबाद में करवाकर शव परिवजनों को सौंप दिया गया।

रचना मैरिज पैलेस के पीछे फैक्ट्री से मिला शव
सिरसा। शहर के डबवाली रोड स्थित रचना मैरिज पैलेस के पीछे एक फैक्ट्री से शुक्रवार को युवक का शव मिला। मृतक की पहचान चतुर्गढ़पट्टी निवासी प्रिंस के रूप में हुई है। शव करीब दो दिन पुराना बताया जा रहा है। मृतक के पिता के अनुसार प्रिंस पेंटर का काम करता था और 19 अगस्त को काम के लिए घर से निकला था, लेकिन वापस नहीं लौटा। स्वजन ने उसकी तलाश की, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला।

हेरोइन सहित युवक काबू, बाइक जब्त
फतेहाबाद। पुलिस चौकी गुरुनानकपुरा की टीम ने रतिया रोड बाईपास क्षेत्र में दबिश देकर एक युवक को 14.03 ग्राम हेरोइन के साथ रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान अनिल कुमार पुत्र मखन सिंह निवासी शास्त्री नगर, फतेहाबाद के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से नशीला पदार्थ और वाहदात में इस्तेमाल मोटरसाइकिल को जब्त कर लिया है।

एक महीने में चीनी 21 और गुड़ 20 रुपये किलो महंगा

त्योहारी सीजन से पहले मिठाई पर महंगाई की चाशनी, दाम 20 रुपये किलो तक बढ़े

हरिभूमि न्यूज ►फतेहाबाद

त्योहारों का सीजन शुरू होने से पहले ही मिठाइयों पर महंगाई की चाशनी चढ़ गई है। पिछले करीब एक महीने में चीनी के भाव 45 रुपए से बढ़कर 66 रुपए प्रति किलो तक पहुंच गए हैं। वहीं गुड़ भी 55 से बढ़कर 75 रुपए किलो हो गया है। कच्चे माल की लागत बढ़ने के चलते हलवाई यूनियन ने मिठाइयों के दाम में करीब 20 रुपए प्रति किलो की बढ़ोतरी कर दी है। इससे त्योहारों पर मिठाई खरीदने वाले लोगों का बजट बिगड़ना तय माना जा रहा है। हालांकि शहर के अधिकांश दुकानदारों ने अचानक ज्यादा बोझ डालने के बजाय फिलहाल सीमित बढ़ोतरी की है। व्यापारियों का कहना है कि यदि चीनी, दूध, खोया, घी और मेवे के भाव इसी तरह बढ़ते रहे तो आने वाले दिनों में मिठाइयों के दाम और बढ़ सकते हैं।

त्योहारी मांग बड़ी तो और बढ़ सकती है लागत
त्योहारों के दौरान मिठाई की बिक्री सामान्य दिनों के मुकाबले बढ़ जाती है। ऐसे में दुकानदारों को पहले से ही बड़ी मात्रा में चीनी, दूध, खोया, घी और मेवे की खरीद करनी पड़ती है।



हलवाई यूनियन प्रधान नरेश गिरधर ।

आगे और महंगी हो सकती मिठाई

हलवाई यूनियन की बैठक के बाद मिठाइयों के दाम में करीब 20 रुपए प्रति किलो की बढ़ोतरी की गई है। दुकानदारों का कहना है कि बढ़ती लागत के बावजूद उन्होंने ग्राहकों पर पूरा भार डालने के बजाय सीमित बढ़ोतरी की है। हलवाई यूनियन के प्रधान नरेश गिरधर ने कहा कि यदि सरकार की ओर से चीनी के दाम कम होते हैं तो ग्राहकों पर अतिरिक्त बोझ डालने की जरूरत नहीं पड़ेगी। लेकिन भाव इसी तरह बढ़ते रहे तो मिठाइयों के दाम में आगे भी बढ़ाव करना पड़ सकता है।

20 रुपए प्रति किलो की बढ़ोतरी : नरेश

हलवाई एसोसिएशन के प्रधान नरेश गिरधर ने कहा कि त्योहारी सीजन को देखते हुए दुकानदार आने वाले दिनों में बाजार की स्थिति और कच्चे माल के भाव पर लगातार नजर रखेंगे। बिल्टू, दीपक और रामस्वरूप हलवाई ने बताया कि कमर्शियल सिलेंडर के दाम बढ़ने के बाद पहले मिठाइयों के भाव बढ़ाए गए थे। अब चीनी और अन्य कच्चे माल की लागत बढ़ने के कारण यूनियन की बैठक के बाद करीब 20 रुपए प्रति किलो की बढ़ोतरी की गई है। उनका कहना है कि फिलहाल बढ़ी हुई लागत के बावजूद ग्राहकों पर कम से कम बोझ डालने का प्रयास किया गया है।

एथेनॉल उत्पादन भी बताया जा रहा भाव बढ़ने की वजह

शहर के नागरिक राजेश और संदीप का कहना है कि गन्ने का इस्तेमाल एथेनॉल उत्पादन में बढ़ने के कारण चीनी के लिए उपलब्ध गन्ने पर दबाव बढ़ रहा है। इसके अलावा उत्तर प्रदेश में 2027 में होने वाले विधानसभा चुनावों को देखते हुए गन्ने के दाम बढ़ने की संभावनाओं का भी बाजार पर असर बताया जा रहा है।

कारोबारियों को आशंका है कि यदि मांग बढ़ने के साथ कच्चे

माल के दाम भी बढ़े तो मिठाइयों की कीमतों पर दोहरा असर

खांड के भाव बढ़ने से बड़ी चिंता

चीनी के साथ गुड़ के भाव में भी तेजी आई है। एक महीने पहले करीब 55 रुपए किलो बिक रहा गुड़ अब 75 रुपए किलो तक पहुंच गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में गुड़ और खांड का इस्तेमाल मिठाइयों, पकवानों और घरेलू व्यंजनों में काफी होता है। ऐसे में चीनी के साथ गुड़ के दाम बढ़ने से त्योहारों पर परिवारों का खर्च बजट प्रभावित होगा। खासकर मध्यम वर्ग के लिए त्योहारी खरीदारी में अतिरिक्त खर्च का दबाव बढ़ गया है।

►► एक महीने में 21 रुपये की छलांग

दुकानदारों के अनुसार चीनी के दाम एक साथ नहीं बढ़े, बल्कि पिछले एक महीने में कई बार थोड़ी-थोड़ी बढ़ोतरी हुई। करीब 50-50 पैसे की बढ़ोतरी होने से शुरुआत में ग्राहकों को इसका ज्यादा असर महसूस नहीं हुआ। लेकिन लगातार बढ़ोतरी के बाद चीनी का भाव 45

रुपए से बढ़कर 66 रुपए प्रति किलो पहुंच गया। यानी करीब एक महीने में 21 रुपए प्रति किलो की बढ़ोतरी हुई है। त्योहारी सीजन में मिठाई और अन्य पकवानों की मांग बढ़ने से चीनी की खपत भी बढ़ जाती है, ऐसे में इसका सीधा असर उत्पादन लागत पर पड़ रहा है।

एक नजर में जानें

►► चीनी : 45 से बढ़कर 66 रुपए प्रति किलो
►► चीनी में बढ़ोतरी : करीब 21 रुपए प्रति किलो
►► गुड़ : 55 से बढ़कर 75 रुपए प्रति किलो
►► गुड़ में बढ़ोतरी : 20 रुपए प्रति किलो
►► मिठाइयों के भाव : करीब 20 रुपए प्रति किलो बढ़े

सिलेंडर महंगा होने के बाद पहले भी बढ़े थे मिठाई के भाव

मिठाई कारोबारियों का कहना है कि मार्च में कमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमतों में बढ़ोतरी के बाद मिठाई बनाने की लागत बढ़ी थी। इसके चलते पहले ही मिठाइयों के दाम में बढ़ोतरी करनी पड़ी थी। अब चीनी और गुड़ के भाव बढ़ने से कारोबारियों के सामने दूसरी बार लागत बढ़ने की स्थिति बन गई है। हलवाई बताते हैं कि मिठाई की लागत केवल चीनी से तय नहीं होती, बल्कि दूध, खोया, घी, मेवा, गैस और श्रम लागत भी महत्वपूर्ण होती है।

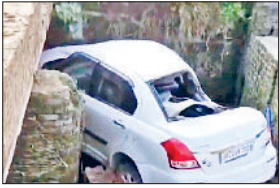
पड़ेगा। दुकानदारों का कहना है कि फिलहाल ग्राहकों को राहत

देने के लिए बढ़ोतरी सीमित रखी गई है।

इंदाछोई में हादसों का पर्याय बना जर्जर पुल, गड्ढे में उछलकर पलटी कार

हरिभूमि न्यूज ►फतेहाबाद

जिले के टोहाना उपमंडल के गांव इंदाछोई में फतेहाबाद डिस्ट्रीब्यूटरी पर बना दशकों पुराना पुल अब राहगीरों के लिए हादसों का सबब बनता जा रहा है। विभागीय अनदेखी और जर्जर बदहाली के कारण शुक्रवार देर रात्रि इंदाछोई-कुल्ला मार्ग पर एक भीषण हादसा हो गया। पुल के क्षतिग्रस्त हिस्से और गहरे गड्ढे में उछलकर एक कार अनियंत्रित होकर पलट गई। गनीमत यह रही कि कार की रफ्तार कम थी, जिससे बड़ा हादसा होने से टल गया और कार चालक युवक को मामूली चोटें आई हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार, इंदाछोई से कुल्ला को जोड़ने वाला यह मुख्य मार्ग काफी व्यस्त रहता है।



गांव इंदाछोई में नहर में गिरी कार ।

नशुक्रवार रात गांव का ही निवासी कमल अपनी कार से लौट रहा था। पुल की असमान सतह और गड्ढे के कारण उसकी कार अचानक उछलकर असंतुलित हुई और पलट गई। चीख-पुकार सुनकर मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने काफी मशक्कत के बाद कमल को सुरक्षित बाहर निकाला। ग्राम पंचायत इंदाछोई ने प्रशासनिक लापरवाही पर कड़ा रोष व्यक्त किया है।

घघघर में घटा बहाव, गुहला चीका में 12,782 क्यूसिक पानी दर्ज

■ 21 अगस्त के मुकाबले तीनों स्थानों पर बहाव में बदलाव, पहाड़ों में बारिश से नदी के जलस्तर पर निगरानी

गुहला चीका में एक दिन में 8778 क्यूसिक घटा पानी

आंकड़ों के मुताबिक 21 अगस्त को गुहला चीका में पानी का बहाव 21,560 क्यूसिक था, जो 22 अगस्त को घटकर 12,782 क्यूसिक रह गया। इसी तरह खनौरी में बहाव 5,788 से घटकर 4,497 क्यूसिक हो गया। इसके विपरीत चांदपुरा साइफन में पानी की आवक 2,150 से बढ़कर 3,750 क्यूसिक पहुंच गई। अलग-अलग स्थानों पर पानी की आवक में इस तरह का उतार-चढ़ाव पहाड़ी क्षेत्रों में बारिश और नदी के बहाव पर निर्भर करता है।

बी.पी.एड. (B.P.Ed.) में दाखिला आरंभ
पी.टी.आई. तथा डी.पी.ई. (शांतिरक शिक्षा निदेशक) के पद पर होगी नियुक्ति
राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) से मान्यता प्राप्त एवं इंडिया गांकी डिप्लोमा इन टीचिंग, बीएड, बीचडी (ICU) से सम्बंध महाशाणा प्रताप कानोज ओपेन यूनिवर्सिटी, बनौन्दा (बजाव - कनौजा), जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) में सत्र 2026-28 हेतु बी.पी.एड. (B.P.Ed.) (डी.पी.ई. कोर्स) में दाखिला आरंभ हो गया है। बी.पी.एड. में प्रवेश हेतु स्नातक में 50% अंक तथा राज्य स्तर का खेल का प्रमाण पत्र होना आवश्यक है। एस.सी. विद्यार्थियों को संस्कार द्वारा छात्रवृत्ति दी जाती है। इच्छुक विद्यार्थी सीधे कॉलेज में दाखिला ले सकते हैं तथा www.mpcokanania.com व कॉलेज फोन नं. **9467834482, 8053910428** पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। (Adv.)

OMSTERLING GLOBAL UNIVERSITY
(APPROVED BY UGC, MINISTRY OF EDUCATION, GOVT. OF INDIA)

Discover more at www.osgu.ac.in
Info@osgu.ac.in
f @ t i n y /OSGUISAR

EXCELLENCE IN EDUCATION
18 Years

SECURE YOUR SEAT

- ★ **M.Pharm / Pharm.D**
- ★ **B.Pharm / D.Pharm**
- ★ **BFA/MFA**
- ★ **B.Sc./M.Sc. Agri.**
- ★ **B.Tech. - CSE - AIML, Cyber Security**
- ★ **B.Sc/M.Sc Hotel Mgmt.**
- ★ **BA LLB/LLB/LLM**
- ★ **BCA - (AI & Data Science, Cyber Security)**
- ★ **BA/BBA**
- ★ **B.Sc. (Forensic Science)**

SALIENT FEATURES :

- ✓ Professional Education through reputed Academicians
- ✓ Modern Campus, Sports & Hostel Facilities
- ✓ Expert Career & Placement Support (Govt./Private)
- ✓ Govt. & Industries Collaboration for Advanced Learning

SEPARATE HOSTEL FACILITY AVAILABLE FOR BOTH GIRLS & BOYS

Campus : NH-52, Hisar-Chandigarh Road, Hisar-125001, Haryana

86078 99999
82550 99999

B.Ed. Special Education (HI / VI / ID / LD / MD) **RCI APPROVED COURSES CODE HR 056**

B.Ed. M.Ed. Special Education (ID/SLD)

Bachelor in Allied Healthcare (Para Medical)
(BMLS, B.Optomtry, B.AOTT)
Diploma in Palliative Care Technology,
Diploma in Health Information Management,
Diploma in Medical Secretarial and Transcription

TATA की पेशकश

TANISHQ
Festival of Diamonds

नेचुरल डायमंड्स से सजे मनमोहक डिज़ाइन, जो आपकी चमक को सबसे अलग बनाएँ

पलैट 20% छूट
10,000+ डिज़ाइन्स में डायमंड की कीमत पर*

0% कदौती*
डायमंड ज्वेलरी खरीदने पर 9 कैरट वित्तने कम के पुराने सोने के एक्स्चेंज पर।

Talk to our Jewellery expert to know more ☎ 1800 2966 677 | Buy online at tanishq.co.in or Download our App 📱 *Conditions apply, For T&C visit our website.

नया शोरूम :- तनिष्क, बस स्टैंड के पास, हिसार रोड, सिरसा, टेली. : 86077 80000



दोस्त या रिश्तेदार की मदद पड़ेगी भारी

लोन में गारंटर बनने के कई नुकसान

बिजनेस डेस्क

दोस्त, रिश्तेदार या करीबी व्यक्ति मुश्किल समय में आर्थिक मदद मांगता है तो मना करना आसान नहीं होता। कई बार व्यक्ति खुद लोन लेने की स्थिति में होता है, लेकिन बैंक की शर्तों के कारण उसे गारंटर की जरूरत पड़ती है। ऐसे में भावनात्मक रिश्ते के कारण लोग बिना पूरी जानकारी लिए लोन गारंटर बनने के लिए तैयार हो जाते हैं, लेकिन गारंटर बनना महज एक औपचारिकता नहीं है। इसके अर्थ है कि यदि मुख्य उधारकर्ता अपनी देनदारी पूरी नहीं करता, तो गारंटी की शर्तों के अनुसार बैंक आपसे भी बकाया रकम की वसूली कर सकता है। इसलिए किसी के लोन की गारंटी देने से पहले यह समझना जरूरी है कि इससे आपके क्रेडिट रिकॉर्ड, भविष्य में लोन लेने की क्षमता और व्यक्तिगत वित्त पर क्या असर पड़ सकता है।

गारंटर बनने का मतलब क्या

लोन में गारंटर वह व्यक्ति होता है जो बैंक या वित्तीय संस्थान को यह आश्वासन देता है कि यदि मुख्य उधारकर्ता अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं करता तो लागू गारंटी की शर्तों के अनुसार वह देनदारी पूरी करेगा। इसलिए किसी दस्तावेज पर सिर्फ इसलिए हस्ताक्षर नहीं करने चाहिए कि सामने वाला दोस्त या रिश्तेदार है। हस्ताक्षर करने से पहले यह समझना जरूरी है कि आप किस रकम, किस अवधि और किन शर्तों के लिए गारंटी दे रहे हैं।

गारंटर बनते ही क्रेडिट स्कोर घटता है

नहीं, केवल गारंटर बनने से अपने आप क्रेडिट स्कोर खराब होना जरूरी नहीं है। अगर मुख्य उधारकर्ता समय पर ईएमआई चुका रहा है और लोन खाते में कोई डिफॉल्ट नहीं हो रहा है, तो सामान्य तौर पर केवल गारंटर होने की वजह से आपके क्रेडिट रिकॉर्ड पर नकारात्मक असर नहीं पड़ता। लेकिन समस्या तब शुरू हो सकती है जब मुख्य उधारकर्ता ईएमआई चुकाने में लगातार चूक करता है। ऐसी स्थिति में लोन खाते से जुड़ी डिफॉल्ट जानकारी गारंटर के क्रेडिट प्रोफाइल को भी प्रभावित कर सकती है। लगातार भुगतान में चूक होने से भविष्य में आपकी क्रेडिट हिस्ट्री पर नकारात्मक असर पड़ने का जोखिम बढ़ सकता है। इसलिए गारंटर बनने के बाद भी लोन की स्थिति पर नजर रखना जरूरी है।

बड़ा खतरा : कर्ज चुकाने की जिम्मेदारी

गारंटर बनने का सबसे महत्वपूर्ण जोखिम आर्थिक है। यदि मुख्य उधारकर्ता लोन की किस्तें नहीं चुका पाता है तो बैंक या वित्तीय संस्थान गारंटी समझौते की शर्तों के अनुसार गारंटर से भी बकाया रकम की वसूली कर सकता है। यानी जिस लोन का पैसा आपने लिया ही नहीं, उसकी जिम्मेदारी कुछ परिस्थितियों में आपके ऊपर भी आ सकती है। यही वजह है कि गारंटर बनने से पहले यह सवाल खुद से जरूर पूछें। अगर सामने वाला व्यक्ति कल से ईएमआई देना बंद कर दे तो क्या में इस लोन की जिम्मेदारी संभाल सकता हूँ अगर इसका जवाब 'नहीं' है तो अगर रिश्तेदारी या दोस्ती के दबाव में गारंटर बनना जोखिम भरा हो सकता है।

लोन लेने में आ सकती है दिक्कत

गारंटर बनने का असर केवल क्रेडिट स्कोर तक सीमित नहीं है। जब आप भविष्य में होम लोन, कार लोन या कोई अन्य बड़ा कर्ज लेने के लिए अपेदन करते हैं तो बैंक आपकी मौजूदा वित्तीय जिम्मेदारियों और क्रेडिट प्रोफाइल का आकलन कर सकता है। जिस लोन की आपने गारंटी दी है, वह आपकी वित्तीय प्रोफाइल के आकलन में महत्वपूर्ण हो सकता है। खासकर यदि उस लोन में भुगतान संबंधी समस्या चल रही हो तो आपके लिए नया कर्ज लेना कठिन हो सकता है या बैंक अतिरिक्त जांच कर सकता है।

रिश्तेदार है तो भी पहले जांच करें

गारंटर बनने से पहले केवल रिश्ते को आधार न बनाएं। यह जानना जरूरी है कि जिस व्यक्ति के लोन की गारंटी आप दे रहे हैं, उसकी आय कितनी है, उसकी मौजूदा ईएमआई कितनी है और उस पर पहले से कितना कर्ज है। यह भी देखें कि उसकी नौकरी या कारोबार कितना स्थिर है। यदि उसकी आय अनिश्चित है या पहले से कई कर्ज चल रहे हैं तो गारंटर बनने का जोखिम बढ़ सकता है।

दस्तावेज पढ़े बिना न करें हस्ताक्षर

गारंटी दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने से पहले बैंक से स्पष्ट रूप से पूछें कि आपकी जिम्मेदारी की सीमा क्या है। क्या गारंटी केवल मूल रकम तक सीमित है या इसमें ब्याज, शुल्क और अन्य देनदारियां भी शामिल हो सकती हैं? यह जानकारी दस्तावेज की शर्तों से ही स्पष्ट होगी। इसलिए किसी बैंक कर्मचारी, एजेंट या परिचित के कहने मात्र पर दस्तावेज पर हस्ताक्षर न करें। जरूरत हो तो स्वतंत्र वित्तीय या कानूनी सलाह भी ली जा सकती है।

ईएमआई की जानकारी लेते रहें

अगर आपने किसी के लोन की गारंटी दी है तो यह मानकर न चले कि अब आपकी कोई भूमिका नहीं है। मुख्य उधारकर्ता से समय-समय पर ईएमआई भुगतान की स्थिति की जानकारी लेते रहें। किसी भुगतान में देरी की जानकारी मिले तो समस्या बढ़ने से पहले उधारकर्ता से बात करें। शुरुआती स्तर पर समस्या का समाधान करना लंबे समय तक चलने वाले डिफॉल्ट से बेहतर है।

दोस्ती और पैसा, दोनों को अलग रखें

किसी करीबी की मदद करना अच्छी बात है, लेकिन मदद का अर्थ अपनी आर्थिक सुरक्षा को जोखिम में डालना नहीं होना चाहिए। यदि आपको लगता है कि सामने वाला व्यक्ति लोन चुकाने की स्थिति में नहीं है तो गारंटर बनने के बजाय अपनी क्षमता के अनुसार सीमित आर्थिक सहायता करना ज्यादा सुरक्षित विकल्प हो सकता है।

फैसला लेने से पहले ये जरूर पूछें

- » क्या मैं इस व्यक्ति की आय और मौजूदा कर्ज को समझता हूँ?
- » अगर वह ईएमआई नहीं चुका पाया तो क्या मैं संभावित वित्तीय जिम्मेदारी संभाल सकता हूँ?
- » क्या मैंने गारंटी दस्तावेज की सभी शर्तें पढ़ी हैं?
- » क्या भविष्य में मुझे खुद होम, कार या किसी दूसरे बड़े लोन की जरूरत पड़ सकती है?

मदद करें, लेकिन जोखिम समझकर

लोन गारंटर बनना दोस्त या रिश्तेदार की मदद करने का एक तरीका हो सकता है, लेकिन इसमें वित्तीय जोखिम भी जुड़ा है। समय पर ईएमआई वाली रकमे पर समस्या नहीं आती, लेकिन मुख्य उधारकर्ता के डिफॉल्ट की स्थिति में गारंटर की क्रेडिट प्रोफाइल और आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है। इसलिए गारंटर बनने से पहले भावनात्मक रिश्ते से ज्यादा महत्वपूर्ण अपनी भुगतान क्षमता, दस्तावेज की शर्तों और भविष्य की वित्तीय जरूरतों को समझना है। किसी की मुश्किल में साथ देना अच्छी बात है, लेकिन ऐसी मदद न करें जो बाद में आपके ही परिवार की आर्थिक सुरक्षा को मुश्किल में डाल दे।

दस साल में चार लार्ज एंड मिड कैप फंड ने दिया शानदार रिटर्न

10 वर्ष में 4 लार्ज एंड मिड कैप फंड ने दिया शानदार रिटर्न, हर माह 10000 की एसआईपी से 12 लाख का निवेश 31 लाख से ज्यादा, चारों फंडों ने दिया 18 से 19% तक एक्सआईआरआर

निवेश नत्रा बिजनेस डेस्क

लंबी अवधि में संपत्ति बनाने के लिए म्यूचुअल फंड की लार्ज एंड मिड कैप श्रेणी निवेशकों के लिए एक विकल्प हो सकती है। इस श्रेणी के फंड बड़ी और स्थापित कंपनियों के साथ मध्यम आकार की तेजी से बढ़ने वाली कंपनियों में निवेश करते हैं। नियमों के अनुसार, ऐसे फंडों को कम से कम 35 प्रतिशत राशि लार्ज कैप और 35 प्रतिशत मिड कैप कंपनियों में लगानी होती है। इस तरह कम से कम 70 प्रतिशत पोर्टफोलियो देश की बाजार पूंजीकरण के लिहाज से शीर्ष 250 कंपनियों में रहता है। 18 अगस्त 2026 को उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक, चार लार्ज एंड मिड कैप फंड ऐसे रहे, जिनमें 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी करने पर कुल 12 लाख रुपये का निवेश बढ़कर 31 लाख रुपये से ज्यादा हो गया। इनमें सबसे बेहतर प्रदर्शन इनवेस्को इंडिया लार्ज एंड मिड कैप फंड का रहा, जिसने 19.3 प्रतिशत का एक्सआईआरआर दिया।

इनवेस्को इंडिया लार्ज एंड मिड कैप फंड

इस सूची में इनवेस्को इंडिया लार्ज एंड मिड कैप फंड पहले स्थान पर है। अगस्त 2007 में शुरू हुआ यह फंड पहले इनवेस्को इंडिया ग्रोथ अपॉय्च्युनिटीज फंड के नाम से जाना जाता था। फंड शेयरों का चयन करने के लिए ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर, दोनों तरह की रणनीति का इस्तेमाल करता है। इसमें किसी एक सेक्टर या निवेश शैली पर अत्यधिक निर्भरता नहीं रखी जाती। इस फंड में 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी करने पर कुल 12 लाख रुपये का निवेश बढ़कर करीब 33.2 लाख रुपये हो गया। इस आधार पर इसका एक्सआईआरआर 19.3 प्रतिशत रहा। फंड के प्रमुख निवेशों में इंटरनेल, मैक्स हेल्थकेयर इंस्टीट्यूट, इंटरग्लोब एविएशन, आईसीआईसीआई बैंक और प्रेस्टिज एस्टेट्स प्रोजेक्ट्स शामिल हैं। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, करीब 38.1 प्रतिशत निवेश लार्ज कैप, 35.9 प्रतिशत मिड कैप और 23.1 प्रतिशत स्मॉल कैप कंपनियों में था।



क्वांट लार्ज एंड मिड कैप फंड

दूसरे स्थान पर क्वांट लार्ज एंड मिड कैप फंड रहा। दिसंबर 2006 में शुरू हुआ यह फंड शेयरों के चयन में आंकड़ों पर आधारित रणनीति अपनाता है। फंड हाउस का वीएलआरटी ढांचा कंपनियों के मूल्यांकन, नकदी की उपलब्धता, जोखिम और निवेश के सही समय जैसे पहलुओं को ध्यान में रखता है। 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की

एसआईपी करने पर कुल 12 लाख रुपये का निवेश बढ़कर करीब 31.3 लाख रुपये हो गया। इसका एक्सआईआरआर 18.3 प्रतिशत रहा। फंड के प्रमुख निवेशों में लॉयड्स मेटलस एंड एनर्जी, ऑरोबिंदो फार्मा, संवर्धन मद्रसन इंटरनेशनल, अडानी एंटरप्राइजेज और अडानी ग्रीन एनर्जी शामिल रहे। पोर्टफोलियो में करीब 38.2 प्रतिशत लार्ज कैप, 33.1 प्रतिशत मिड कैप और 5.2 प्रतिशत स्मॉल कैप में निवेश था।

निवेश के ये फॉर्मूले, अपनाएं कभी नहीं रहेगा पैसे का संकट

जानकारी बिजनेस डेस्क

पैसे को दोगुना से चार गुना तक आसानी से कर सकेंगे

इमरजेंसी फंड व इक्विटी डेट का संतुलन बनाएंगे

निवेश की दुनिया में विकल्पों की कोई कमी नहीं है। बैंक एफडी, बॉन्ड, म्यूचुअल फंड, इक्विटी, डेट और सोने जैसे कई माध्यमों में पैसा लगाया जा सकता है। लेकिन निवेश में सफलता केवल इस बात पर निर्भर नहीं करती कि पैसा कहाँ लगाया गया है, बल्कि यह भी महत्वपूर्ण है कि कितनी राशि निवेश की जा रही है, कितने समय के लिए निवेश किया जा रहा है और जोखिम को किस तरह नियंत्रित किया जा रहा है। इसी उद्देश्य से वित्तीय योजना में कुछ आसान नियमों का इस्तेमाल किया जाता है। इन नियमों का मदद से निवेशक मोटे तौर पर यह समझ सकता है कि उसका पैसा कितने समय में दोगुना या चार गुना हो सकता है, आय का कितना हिस्सा खर्च और बचत में जाना चाहिए तथा इमरजेंसी के लिए कितनी रकम अलग रखनी जरूरी है। हालांकि ये नियम अनुमान देने वाले सामान्य वित्तीय फॉर्मूले हैं, इन्हें निश्चित रिटर्न की गारंटी नहीं माना जाना चाहिए।

रूल ऑफ 72, 114 और 144 कंपाउंडिंग को समझने के आसान तरीके हैं, जबकि 50-30-20, 100 माइनस एज और 10 फीसदी निवेश जैसे नियम व्यक्तिगत वित्त को व्यवस्थित करने में मदद कर सकते हैं। लेकिन किसी भी नियम को अंतिम निवेश सलाह नहीं माना जाना चाहिए। सही रणनीति बनाने के लिए निवेशक को अपनी आय, उम्र, जोखिम क्षमता, वित्तीय लक्ष्य, कर्ज और निवेश की अवधि को ध्यान में रखना चाहिए। सबसे जरूरी बात यह है कि पहले इमरजेंसी फंड और पर्याप्त बीमा जैसी वित्तीय सुरक्षा तैयार करें, फिर लक्ष्य के मुताबिक नियमित और अनुशासित निवेश करें। निवेश में जल्द अमीर बनने के बजाय लंबे समय तक टिके रहना ज्यादा महत्वपूर्ण है।

1. रूल ऑफ 72

रूल ऑफ 72 का इस्तेमाल यह अनुमान लगाने के लिए किया जाता है कि किसी निवेश को दोगुना होने में लगभग कितना समय लग सकता है। इसके लिए 72 को अनुमानित सालाना रिटर्न से भाग दिया जाता है।

फॉर्मूला: 72 ÷ अनुमानित रिटर्न = पैसा दोगुना होने का अनुमानित समय
उदाहरण के लिए, अगर किसी निवेश से सालाना 12 फीसदी रिटर्न मिलने की उम्मीद है तो 72÷12 = 6। यानी अनुमान के तौर पर पैसा करीब छह साल में दोगुना हो सकता है। इसी तरह चार साल में पैसा दोगुना करने के लिए करीब 18 फीसदी सालाना रिटर्न की जरूरत होगी। बाजार आधारित निवेश में वास्तविक रिटर्न अलग हो सकता है।

2. रूल ऑफ 114

अगर आप यह जानना चाहते हैं कि आपका निवेश लगभग कितने समय में तीन गुना हो सकता है तो रूल ऑफ 114 इस्तेमाल किया जाता है।

फॉर्मूला: 114 ÷ अनुमानित सालाना रिटर्न = 12 फीसदी अनुमानित सालाना रिटर्न के मामले में 114÷12 = 9.5 साल। यानी इस फॉर्मूले के अनुसार निवेश को तीन गुना होने में करीब साढ़े नौ साल लग सकते हैं।

3. रूल ऑफ 144

रूल ऑफ 144 से यह अनुमान लगाया जाता है कि निवेश कितने समय में चार गुना हो सकता है।



फॉर्मूला: 144 ÷ अनुमानित सालाना रिटर्न = अगर अनुमानित रिटर्न 12 फीसदी सालाना है तो 144÷12 = 12 साल। यानी इस गणना के अनुसार पैसा करीब 12 साल में चार गुना हो सकता है। कंपाउंडिंग का असर लंबी अवधि में निवेश की वृद्धि को काफी प्रभावित करता है।

4. 50-30-20 रूल

मासिक बजट को व्यवस्थित रखने के लिए 50-30-20 नियम काफी लोकप्रिय है। इसके अनुसार आय का करीब 50 फीसदी हिस्सा जरूरी खर्चों, 30 फीसदी गैर-जरूरी जरूरतों या इच्छाओं और 20 फीसदी बचत एवं निवेश के लिए रखा जा सकता है।

हालांकि हर व्यक्ति की आय, पारिवारिक

जिम्मेदारियां और खर्च अलग होते हैं। इसलिए इसे एक शुरुआती बजटिंग फ्रेमवर्क की तरह इस्तेमाल करना बेहतर है। जिन लोगों पर कर्ज का बोझ अधिक है, वे निवेश से पहले महंगे कर्ज को कम करने पर भी ध्यान दे सकते हैं।

5. 100 माइनस एज रूल

निवेश पोर्टफोलियो में इक्विटी और डेट का अनुपात तय करने के लिए 100 माइनस एज नियम का इस्तेमाल किया जाता रहा है। इसमें निवेशक की उम्र को 100 से घटाया जाता है। बची हुई संख्या को इक्विटी में निवेश का संभावित प्रतिशत माना जाता है। मसलन, 30 साल के निवेशक के लिए 100-30 यानी 70 फीसदी इक्विटी और 30 फीसदी डेट का

निवेश हरिभूमि 8

बंधन लार्ज एंड मिड कैप फंड

चौथे स्थान पर बंधन लार्ज एंड मिड कैप फंड रहा। अगस्त 2005 में शुरू हुआ यह फंड पहले बंधन कोर इक्विटी फंड और उससे पहले आईडीएफसी कोर इक्विटी फंड के नाम से जाना जाता था। इसका उद्देश्य अच्छी तरह संवर्धित और टिकाऊ कारोबार वाली ऐसी कंपनियों में निवेश करना है, जिनके शेयर उचित मूल्यांकन पर उपलब्ध हों। इसमें 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी करने पर 12 लाख रुपये का कुल निवेश बढ़कर करीब 31.1 लाख रुपये हो गया। इसका एक्सआईआरआर 18.1 प्रतिशत रहा। फंड के प्रमुख निवेशों में एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, वलेंट कन्सुलिकेंशंस और इंफोसिस शामिल रहे। पोर्टफोलियो में करीब 39.4 प्रतिशत लार्ज कैप, 36.2 प्रतिशत मिड कैप और 18.6 प्रतिशत स्मॉल कैप कंपनियों में निवेश था।

सिर्फ रिटर्न देखकर निवेश न करें

इन फंडों के 10 साल के आंकड़े आकर्षक जरूर हैं, लेकिन केवल पिछले प्रदर्शन के आधार पर निवेश का फैसला करना उचित नहीं है। लार्ज एंड मिड कैप फंड में मिड कैप कंपनियां का पर्याप्त हिस्सा होता है। इसलिए शेयर बाजार में बड़ी गिरावट आने पर इन फंडों में भी तेज उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है। निवेशकों को फंड का प्रदर्शन अलग-अलग बाजार परिस्थितियों में देखना चाहिए। यह देखना जरूरी है कि फंड ने अपने बेचमार्क और समान श्रेणी के दूसरे फंडों की तुलना में कितनी निरंतरता दिखाई है। इसके अलावा फंड की निवेश रणनीति, पोर्टफोलियो की गुणवत्ता, जोखिम और खर्च जैसे पहलुओं को भी समझना चाहिए।

अनुपात माना जा सकता है। उम्र बढ़ने के साथ इक्विटी का हिस्सा कम करने का विचार जोखिम को नियंत्रित करने से जुड़ा है।

6. न्यू, 10% निवेश नियम

इस नियम के अनुसार आय का कम से कम 10 फीसदी हिस्सा लंबी अवधि के लक्ष्यों के लिए निवेश किया जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात नियमित निवेश है। आय बढ़ने के साथ निवेश की रकम भी बढ़ाते रहना चाहिए। मसलन, अगर किसी व्यक्ति की मासिक आय 50 हजार रुपये है तो शुरुआत में कम से कम 5 हजार रुपये लंबी अवधि के निवेश के लिए अलग रखे जा सकते हैं। भविष्य में वृद्धि बढ़ने पर निवेश राशि बढ़ाने से कंपाउंडिंग का लाभ और मजबूत हो सकता है।

7. इमरजेंसी फंड रूल

सारी बचत को निवेश कर देना समझदारी नहीं है। अचानक नौकरी जाने, बीमारी, घर की मरम्मत या किसी अन्य आपात स्थिति में तुरंत उपलब्ध पैसे की जरूरत पड़ सकती है। इसलिए कम से कम छह महीने के जरूरी खर्चों के बराबर इमरजेंसी फंड बनाने की सलाह दी जाती है। अगर किसी परिवार का जरूरी मासिक खर्च 40 हजार रुपये है तो छह महीने के दिहाब से करीब 2.4 लाख रुपये का आपातकालीन फंड लगाना जा सकता है। इस रकम को ऐसे माध्यम में रखना बेहतर होता है जहां जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से उपलब्ध हो।

पैसा सुरक्षित दिखने के बावजूद कम रिटर्न देने वाला निवेश कर सकता है नुकसान

पहचानें और समय रहते लें फैसला इससे परेशानी से बचा जा सकेगा

अलर्ट बिजनेस डेस्क

निवेश करते समय ज्यादातर लोग इस बात पर ध्यान देते हैं कि उनका पैसा डूब तो नहीं रहा। लेकिन केवल मूल रकम सुरक्षित रहना ही अच्छे निवेश की निशानी नहीं है। अगर आपका पैसा लंबे समय तक ऐसे निवेश में फंसा हुआ है, जो मामूली या लगभग शून्य रिटर्न दे रहा है, तो वह देखने में सुरक्षित होने के बावजूद आपकी संपत्ति बढ़ाने की क्षमता को कमजोर कर सकता है। निवेश की दुनिया में ऐसे निवेश को आमतौर पर 'डेड मनी' कहा जाता है। 'डेड मनी' का मतलब किसी ऐसे निवेश से है, जिसमें पैसा लगा हुआ है, लेकिन लंबे समय से उस पर अपेक्षित वृद्धि नहीं हो रही। जरूरी नहीं कि ऐसे निवेश में निगेटिव रिटर्न ही मिल रहा हो। कई बार निवेश का मूल्य थोड़ा बढ़ता है, लेकिन महंगाई और दूसरे सामान निवेशों के मुकाबले उसका प्रदर्शन इतना कमजोर होता है कि पैसा प्रभावी रूप से निष्क्रिय पड़ा रहता है।

कैसे पहचानें डेड मनी?

हर कमजोर प्रदर्शन करने वाले फंड को तुरंत बेच देना सही रणनीति नहीं है। बाजार में अलग-अलग समय पर अलग-अलग कैटेगरी का प्रदर्शन बदलता रहता है। इसलिए किसी निवेश को डेड मनी मानने से पहले कुछ महत्वपूर्ण संकेतों को देखना चाहिए। पहला संकेत है लंबी अवधि तक कमजोर प्रदर्शन। अगर कोई फंड लगातार कई निमाहियों तक कमजोर बना हुआ है और उसके प्रदर्शन में सुधार के संकेत नहीं मिल रहे हैं, तो इसकी समीक्षा जरूरी है। केवल एक-दो खराब तिमाही के आधार पर फैसला नहीं लेना चाहिए। दूसरा संकेत है समान कैटेगरी के फंडों से लगातार पिछड़ना। अगर आपके फंड की कैटेगरी के दूसरे फंड लगातार बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं और आपका फंड लंबे समय तक पीछे बना हुआ है, तो यह चिंता का कारण हो सकता है। तीसरा संकेत है निवेश रणनीति में बदलाव। अगर फंड की रणनीति, फंड मैनेजर, पोर्टफोलियो या जोखिम प्रोफाइल में बड़ा बदलाव हुआ है तो यह देखना जरूरी है कि मौजूदा निवेश अभी भी आपके लक्ष्य के अनुकूल है या नहीं।

मूल पैसा सुरक्षित फिर भी नुकसान

मान लीजिए आपके पास एक लाख रुपये हैं और आपने उन्हें ऐसे फंड में लगा रखा है, जो लंबे समय तक बहुत कम रिटर्न दे रहा है। एक-दो साल बाद भी अगर आपकी रकम लगभग उतनी ही है, तो पहली नजर में लग सकता है कि आपको कोई नुकसान नहीं हुआ। लेकिन इसी अवधि में बाजार के दूसरे समान फंडों ने बेहतर प्रदर्शन किया हो तो आपका पैसा वहां ज्यादा बढ़ सकता था। यहीं 'अपॉयुनिटी कॉस्ट' सामने आती है। यानी जिस निवेश में आपका पैसा अटक रहा, उसकी वजह से आप बेहतर रिटर्न वाले दूसरे अवसर का फायदा नहीं उठा पाए। इसलिए निवेश में केवल यह देखना पर्याप्त नहीं है कि पैसा घटा या बढ़ा, बल्कि यह भी देखना जरूरी है कि वह आपके लक्ष्य के मुताबिक पर्याप्त गति से बढ़ रहा है या नहीं।

पोर्टफोलियो में पड़ा 'डेड मनी' कहीं आपकी कमाई तो नहीं रोक रहा?

पोर्टफोलियो की समय समय पर करें समीक्षा

'डेड मनी' से बचने का सबसे अच्छा तरीका है कि पोर्टफोलियो को लंबे समय तक बिना देखे न छोड़ें। साल में कम से कम एक या दो बार निवेश की समीक्षा की जा सकती है। इसमें यह देखना चाहिए कि कौन सा निवेश लक्ष्य के मुताबिक प्रदर्शन कर रहा है, कौन लगातार पिछड़ रहा है और क्या पोर्टफोलियो में जोखिम का संतुलन बना हुआ है। निवेश का उद्देश्य सिर्फ पैसा सुरक्षित रखना नहीं, बल्कि उसे अपने वित्तीय लक्ष्यों के मुताबिक बढ़ाना भी है। इसलिए किसी निवेश में पैसा सिर्फ इस वजह से नहीं पड़ा रहना चाहिए कि उसमें नुकसान दिखाई नहीं दे रहा। अगर पैसा लगातार अपेक्षा से कम बढ़ रहा है, तो उसकी अवसर लागत भी वास्तविक नुकसान है। इसलिए पोर्टफोलियो में मौजूद हर निवेश से समय-समय पर यह सवाल पूछना जरूरी है। क्या यह पैसा मेरे लिए काम कर रहा है या सिर्फ पड़ा हुआ है? यही सवाल आपको 'डेड मनी' पहचानने और बेहतर वित्तीय फैसले लेने में मदद कर सकता है।

ख़बर संक्षेप

बाइक चोरी का आरोपी काबू, बाइक बरामद

फतेहाबाद। थाना शहर रतिया पुलिस ने वाहन चोरी के मामले में कार्रवाई करते हुए आरोपी मंदीप निवासी ढाणी जाखन को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी की गई मोटरसाइकिल भी बरामद कर ली है। पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। थाना प्रभारी उप निरीक्षक अशोक ने बताया कि गांव लघुवास निवासी मकखन सिंह ने पुलिस को शिकायत दी थी। उसने बताया कि 10 जुलाई को वह किसी काम से रतिया तहसील आया था। दोपहर को उसने अपनी मोटरसाइकिल तहसील के समीप वकील चैंबर स्थित चाय कैटिन के पीछे खड़ी की थी।

डोडा पोस्ट फेंककर भागा तस्कर, गिरफ्तार

फतेहाबाद। डोडा पोस्ट बरामदगी मामले में थाना सदर रतिया पुलिस ने मौके से थैला फेंककर फरार हुए आरोपी पंकज कुमार और इस नेटवर्क के मुख्य आरोपी जीवन सिंह निवासी गांव महमदगी को काबू कर लिया है। पुलिस ने आरोपी पंकज को अदालत में पेश कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है, जबकि मुख्य आरोपी जीवन सिंह से गहनता से पृष्ठताछ की जा रही है। थाना सदर रतिया प्रभारी उप निरीक्षक शीशपाल ने बताया कि 19 अगस्त को उपनिरीक्षक धर्मपाल के नेतृत्व में पुलिस टीम नशीले पदार्थों की रोकथाम के लिए गश्त पर थी। इसी दौरान कार्रवाई की गई।

512 ग्राम अफीम संग नशा तस्कर गिरफ्तार

रतिया। हरियाणा स्टेट नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो की फतेहाबाद यूनिट ने गांव बादलगढ़ के पास छापेमारी कर एक आरोपी को 512 ग्राम अफीम के साथ रों हाथी गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान जसबीर पुत्र बिल्लू सिंह निवासी गांव बलियाला के रूप में हुई है। फतेहाबाद यूनिट के इंचार्ज सब-इंस्पेक्टर तरसेम सिंह ने बताया कि ब्यूरो की टीम पोपसआई बबीता के नेतृत्व में गश्त और नशीले पदार्थों की रोकथाम के लिए गांव महमंडा बस अड्डे के पास मौजूद थी। इसी दौरान सूचना मिली कि जसबीर अवैध रूप से अफीम बेचने का काम करता है और वह भारी मात्रा में अफीम लेकर गांव महमडा से बादलगढ़ रोड स्थित जलपर के पास खड़ा है। सूचना के आधार पर कार्रवाई की गई।

विमुक्त दिवस की तैयारियों को लेकर बैठक

फतेहाबाद। 74वें विमुक्त दिवस समारोह की तैयारियों को लेकर जिला भाजपा कार्यालय बैठक आयोजित की गई। बैठक में समारोह की रूपरेखा, संगठनात्मक व्यवस्थाओं तथा समाज के लोगों की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने पर विस्तार से चर्चा हुई। डीएनटी कल्याण संघ के अध्यक्ष लक्ष्मण नापा ने बताया कि 30 अगस्त को चंडीगढ़ स्थित मुख्यमंत्री आवास में 74वां विमुक्त दिवस समारोह आयोजित किया जाएगा। इसमें हरियाणा के मुख्यमंत्री नाथन सिंह सैनी मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करेंगे। उन्होंने कहा कि विमुक्त, धुम्रंत एवं अर्धधुम्रंत समाज के इतिहास, संघर्ष और योगदान को सम्मान देने के लिए इस कार्यक्रम को लेकर समाज में विशेष उत्साह है।

7.44 ग्राम चिट्ठा के साथ युवक काबू

हांसी। पुलिस की अपराध शाखा -2 की टीम ने 7.44 ग्राम चिट्ठा सहित एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान इंद्रा कॉलोनी निवासी रिकू के रूप में हुई है। उप निरीक्षक फिरोज खान ने बताया कि सीआईए-2 हांसी की पुलिस टीम को गश्त के दौरान सूचना मिली कि मोटरसाइकिल सवार एक युवक नशीला पदार्थ लेकर ऑटो मार्केट हांसी की तरफ आने वाला है। सूचना के आधार पर नाकाबंदी कर शक के आधार पर मोटरसाइकिल सवार युवक को काबू कर नियमानुसार कार्रवाई करते हुए राजपत्रित अधिकारी की मौजूदगी में तलाशी ली गई तो आरोपी के कब्जे से 7.44 ग्राम चिट्ठा बरामद हुआ।

सिरसा में नशे के खिलाफ निकाली पदयात्रा

नशा बेचने वाले लोगों का करें सामाजिक बहिष्कार: एसपी

हरिभूमि न्यूज़ ►►सिरसा

एसपी दीपक सहारन ने युवाओं से आह्वान किया कि वे अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगाएं। खेल, शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में आगे बढ़कर अपने भविष्य को मजबूत बनाएं। उन्होंने कहा कि युवा शक्ति अगर नशे के खिलाफ हुंकार भर दे तो वह दिन दूर नहीं, जब सिरसा पूरी तरह नशा मुक्त होगा। नशा बेचने वालों का सामाजिक बहिष्कार किया जाना चाहिए। नशे को छोड़कर स्वच्छ और स्वस्थ जीवन से नाता जोड़ना ही युवाओं के उज्ज्वल भविष्य का रास्ता है। और जरूरतमंदों की हरसंभव सहायता उपलब्ध करवाई जा रही है। एसपी शनिवार को सिरसा में सामाजिक व धार्मिक संगठनों द्वारा नशे के खिलाफ निकाली गई पदयात्रा को संबोधित कर रहे थे। पदयात्रा में डेरा बाबा भूमण शाह के संत ब्रह्मदास महाराज, नशा मुक्ति सेना के संस्थापक भवानी सिंह, साध्वी राजेश्वरी सहित सैकड़ों लोगों ने हिस्सा लिया।

एसपी ने कहा उन्होंने आमजन से अपील की कि यदि उनके आसपास कोई व्यक्ति नशीले पदार्थ बेचता है तो उसकी सूचना तुरंत पुलिस को दें। उन्होंने कहा कि नशा तस्करों की असली जगह जेल है और युवाओं की जिंदगी से खिलवाड़ करने वालों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा। एसपी ने कहा कि अभी भी कुछ लोग मेडिकल नशे को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसे लोगों पर भी पुलिस की नजर है। उन्होंने मेडिकल या अन्य प्रकार का नशा बेचने वालों की सूचना पुलिस को देने की अपील की, ताकि उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा सके।



सिरसा। पदयात्रा में शामिल एसपी दीपक सहारण, बाबा ब्रहमदास महाराज व साध्वी राजेश्वरी। फोटो: हरिभूमि

750 नशा तस्करों को जेल भेजा

एसपी ने कहा कि सिरसा में उनके कार्यकाल के दौरान करीब 750 नशा तस्करों को जेल की सलाखों के पीछे भेजा जा चुके हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि नशे का जहर बेचकर युवाओं की जिंदगी बर्बाद करने वालों के खिलाफ पुलिस की कार्रवाई आगे भी लगातार जारी रहेगी।उन्होंने सामाजिक और धार्मिक संगठनों की पहल की सराहना करते हुए कहा कि अन्य संगठन भी इससे प्रेरणा लेकर अपने-अपने गांवों और शहरों के नशा मुक्त बनाने में पुलिस प्रशासन का सहयोग करें। उन्होंने कहा कि पुलिस और समाज मिलकर ही नशे के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़ रहे हैं।जिला पुलिस अपने स्तर पर हर घर नशामुक्त संदेश पहुंचाकर युवाओं एवं आमजन को जागरूक कर रही है। पदयात्रा में बाबा भूमन शाह के बाबा ब्रह्मदास महाराज, नशा मुक्ति सेना के संस्थापक भवानी सिंह, साध्वी राजेश्वरी सहित सभी वक्ताओं ने अंजली-अंजली प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि नशामुक्त समाज बनाने के लिए युवाओं को संकल्प लेना होगा तभी हम नशा मुक्त समाज की कल्पना कर सकते हैं।

कबड्डी-कुश्ती मुकाबलों में खिलाड़ियों ने दिखाया दम

पीर बाबा शाहबुशाह का दो दिवसीय सालाना धार्मिक मेला संपन्न

- हजरों श्रद्धालुओं ने माथा टेकर मांगी मन्नतें

हरिभूमि न्यूज़ ►►सिरसा

जिले के गांव पतिहारी में पीर बाबा शाहबुशाह का दो दिवसीय सालाना धार्मिक मेला श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। मेले में हरियाणा और पंजाब से हजारों की संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने पीर बाबा की दरगाह पर माथा टेका और मन्नतें मांगी। धार्मिक कार्यक्रम में हरियाणा व पंजाब के प्रसिद्ध कलाकारों ने पीर बाबा का गुणगान कर समां बांध श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया, वहीं श्रद्धालुओं के लिए अटूट लंगर की व्यवस्था रही।

आधुनिक शिक्षण तकनीकों से कक्षा-कक्ष बनेगा अधिक प्रभावीतन डॉ. खुराना

सिरसा। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) डिन ने आयोजित पांच दिवसीय सतत व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का शनिवार को संचलन हो गया। डाइट प्रवक्ता डॉ. विनोद ने बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम डाइट प्रमारी सुरेंद्र सिंह नूनिया, आईएफआईसी विंग प्रमारी नरेश नरुला तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम समन्वयक एवं डाइट विषय विशेषज्ञ संधीप कुमार की देखरेख में आयोजित किया गया। अंतिम दिन डाइट विषय विशेषज्ञ डॉ. राजेश खुराना ने इमोशनल इंटेलिजेंस विषय पर शिक्षकों को अपनी एवं विद्यार्थियों की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने और सकारात्मक ढंग से व्यक्त करने के गुर बताए। डाइट विषय विशेषज्ञ राकेश मोहन ने लेशन प्लान के तहत प्रभावी पाठ योजना तैयार करने की प्रक्रिया समझाते हुए शिक्षण उद्देश्यों, गतिविधियों, संसाधनों एवं मूल्यांकन को योजनाबद्ध ढंग से शामिल करने पर जोर दिया। वहीं डाइट विषय विशेषज्ञ चंद्र प्रकाश शर्मा ने हॉलिसटिक प्रोग्रेस कार्ड के माध्यम से विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ उनके कौशल, व्यवहार, रुचियों एवं सीखने की प्रगति के समग्र मूल्यांकन की जानकारी दी। समापन अवसर पर डाइट आईएफआईसी विंग सह-प्रमारी डॉ. राजेश खुराना ने कहा कि नवीन शिक्षण तकनीकों एवं आधुनिक शैक्षणिक संसाधनों के प्रभावी उपयोग से अष्टायजन प्रक्रिया को अधिक रोचक, प्रभावी एवं परिणामदायी बनाया जा सकता है।



पंडित सोनू शर्मा।

सावन माह की पुत्रदा एकादशी इस बार 23 अगस्त को गजकैसरी और रवि योग के शुभ संयोग में मनाई जाएगी। धार्मिक मान्यता के अनुसार इस दिन भगवान विष्णु की पूजा और व्रत करने से संतान सुख, संतान के अच्छे स्वास्थ्य, शिक्षा, संस्कार और उज्ज्वल भविष्य की कामना पूरी होती है। श्रद्धालु भगवान विष्णु को पीले फूल, पीले फल, तुलसी दल, चने की दाल और केसरयुक्त खीर का भोग लगाएंगे। वहीं संतान के हाथों भगवान को पूजा सामग्री अर्पित करवाना भी

शुभ माना गया है। पंडित सोनू शर्मा ने बताया कि पुत्रदा एकादशी पर भगवान विष्णु के साथ माता परस्वती का ध्यान करना विशेष फलदायी माना जाता है। पूजा स्थल पर दोनों की

- इस दिन भगवान विष्णु की पूजा और व्रत करना चाहिए
- संतान के हाथों पूजा सामग्री अर्पित करवाना भी शुभ होता है।

प्रतिमा या चित्र स्थापित कर पीले फूल अर्पित किए जा सकते हैं। संतान के अच्छे स्वास्थ्य, ज्ञान और संस्कार की कामना से गाय के घी का दीपक जलाकर विष्णु मंत्रों का जाप करने की परंपरा है। छोटे बच्चों की ओर से माता-पिता विष्णु सहस्रनाम का पाठ कर सकते हैं।

सीडीएलयू में नशामुक्त विकसित भारत पर जागरूकता कार्यक्रम

सिरसा। चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालयसिरसा के युनिवर्सिटी स्कूल फॉर गैजुएट स्टडीज तथा प्रजापिता बह्मकुमारी इंश्चरीय विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में 'नशामुक्त युवा- विकसित भारत अभियान' के अंतर्गत विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुलपति प्रो. चिंजय कुमार ने कहा कि नशा केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य को ही प्रभावित नहीं करता, बल्कि उसके परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है, इसलिए नशामुक्त समाज का निर्माण केवल एक सामाजिक आवश्यकता नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की जिम्मेदारी भी है। उन्होंने विद्यार्थियों का आह्वान किया कि वे अपनी ऊर्जा और प्रतिभा को शिक्षा, शोध, नवाचार, खेल एवं अन्य रचनात्मक गतिविधियों में लगाएं तथा स्वयं नशे से दूर रहते हुए अपने सहयोगियों और समाज को भी इसके दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करें। यूएसजीएस के डीन प्रो. मोहम्मद काशफ किदवाई ने कहा कि युवा शक्ति किसी भी राष्ट्र की रीढ़ होती है और देश का भविष्य युवाओं के मजबूत चरित्र एवं स्वस्थ मानसिकता पर निर्भर करता है। उन्होंने विद्यार्थियों से नशे से दूर रहकर स्वस्थ एवं अनुशासित जीवनशैली अपनाने का आह्वान किया।



नशामुक्त भारत अभियान के तहत किया जागरूक

ओढा। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नुहियावाली में नशामुक्त भारत अभियान के तहत जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। विद्यालय के प्रवक्ता पवन देवीवाल ने बताया कि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग तथा नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो, प्रजापिता बह्मकुमारी इंश्चरीय विश्वविद्यालय के सहयोग से रथयात्रा द्वारा नशामुक्त भारत अभियान के अंतर्गत विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इनका मुख्य उद्देश्य युवाओं एवं आम नागरिकों को नशे के दुष्परभावों के प्रति जागरूक करना, समाज को अभियान से जोड़ना तथा देश को नशामुक्त बनाने के लिए जन-जागरूकता पैदा करना है। इसी कड़ी में शनिवार को विद्यार्थियों को लाघू फिल्म के माध्यम से नशे से होने वाले दुष्परभावों और नशे से दूर रहने के उपायों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में सद्भावना भवन सिरसा से वीके सरिता एवं मनीषा व विद्यार्थियों को नशे से दूर रहने का संदेश देते हुए कहा कि नशा व्यक्ति के स्वास्थ्य, परिवार, शिक्षा और भविष्य को बर्बाद कर देता है।

9 किलो की रसौली ने दबा रखे थे पेट के अंग, ऑपरेशन से मिली राहत

हरिभूमि न्यूज़ ►►फतेहाबाद

सिवाच मैटर्निटी एंड सर्जिकल हॉस्पिटल के चिकित्सकों ने जटिल सर्जरी को सफलतापूर्वक अंजाम देते हुए एक महिला के पेट से करीब 9 किलोग्राम वजन की विशाल रसौली यानि ट्यूमर निकालने में सफलता हासिल की है। लंबे समय से पेट दर्द, भारीपन और सांस लेने में परेशानी से जूझ रही महिला की जांच के दौरान पेट में विशाल ट्यूमर होने का पता चला। ट्यूमर का आकार इतना बड़ा था कि वह आसपास के महत्वपूर्ण अंगों पर दबाव डाल रहा था। चिकित्सकों ने स्थिति की गंभीरता को देखते हुए ऑपरेशन की योजना बनाई और विशेषज्ञ टीम ने पूरी सावधानी के साथ सफल सर्जरी की। ऑपरेशन के बाद महिला की हालत स्थिर : सफल ऑपरेशन के बाद महिला की हालत स्थिर



लंबे समय से थी परेशान

मरीज को पिछले कुछ समय से लगातार पेट दर्द, पेट में भारीपन, असहजता और सांस लेने में परेशानी हो रही थी। शुरुआती तौर पर इन लक्षणों को सामान्य समस्या माना गया, लेकिन परेशानी बढ़ने पर महिला की चिकित्सकीय जांच और सोनोग्राफी कराई गई। जांच में पेट के अंदर बड़ी रसौली होने की पुष्टि हुई।

बताई जा रही है और वह चिकित्सकों की निगरानी में स्वास्थ्य लाभ कर रही है। परिजनों ने चिकित्सकों और मेडिकल स्टाफ का आभार जताया।

वेद मंत्रों से गूंजा डीएवी पुलिस स्कूल

श्रावणी पर्व पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ के साथ वेद सप्ताह का शुभारंभ



फतेहाबाद। डीएवी पुलिस स्कूल में विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित करते प्रशानाचार्या।

आध्यात्मिक एवं सकारात्मक ऊर्जा से भर उठा। इस अवसर पर संस्कृत प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। गत दिवस संस्कृत विद्यापीठ गुरुकुल, मताना में

आयोजित संस्कृत गीतम-प्रतियोगिता में अन्वी ने प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। संस्कृत प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में आराध्या, श्रेया एवं यश की टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

पीपल पर जल चढ़ाकर करें विष्णु का स्मरण

पंडित सोनू शर्मा ने बताया कि एकादशी के दिन सुबह स्नान के बाद पीपल के पेड़ पर जल अर्पित कर दीपक जलाने की भी धार्मिक मान्यता है। इसके बाद भगवान विष्णु का स्मरण कर संतान के अच्छे स्वास्थ्य, शिक्षा और सुख-समृद्धि की प्रार्थना की जाती है। भगवान को मक्खन-मिश्री का भोग लगाना भी शुभ माना गया है। व्रत रखने वाले श्रद्धालु सुबह स्नान कर स्वच्छ या पीले वस्त्र पहनकर संतान सुख अथवा संतान के उज्ज्वल भविष्य का संकल्प ले सकते हैं।

ऐसे करें एकादशी के दिन पूजा

पंडित सोनू शर्मा के अनुसार इस दिन भगवान विष्णु की प्रतिमा को गंगाजल और दूध से स्नान करकेक पंचामृत, तुलसी दल, पीले फूल और फल अर्पित करें। इसके बाद केसरयुक्त खीर, चने की दाल और मक्खन-मिश्री का भोग लगाएं। संतान के कल्याण और संतान सुख की कामना से संतान गोपाल मंत्र का 108 बार जाप किया जा सकता है। पेट के बाद पुत्रदा एकादशी की व्रत कथा पढ़ें या सुनें और भगवान विष्णु की आरती करें।

रात से शुरू हुई एकादशी तिथि

पंचांग के अनुसार एकादशी तिथि 22 अगस्त की रात से शुरू हो गई है जोकि रविवार 23 अगस्त की शाम तक रहेगी। पूजा के लिए सुबह 6 बजे से 10:30 बजे तक का समय शुभ बताया गया है। व्रत रखने वाले श्रद्धालु 24 अगस्त को सूर्योदय के बाद पारण कर सकेंगे। पारण से पहले भगवान विष्णु की पूजा कर उन्हें भोग लगाने की परंपरा है।



फतेहाबाद। पदोन्नत सोहन लाल को स्टार लगाकर बधाई देते एसपी।

मुख्य सिटी सोहनलाल बने सहायक उपनिरीक्षक एसपी ने कंधे पर स्टार लगाकर दी शुभकामनाएं

फतेहाबाद। फतेहाबाद पुलिस विभाग में कार्यरत मुख्य सिटी सोहनलाल को पदोन्नत कर सहायक उपनिरीक्षक बनाया गया है। शनिवार को पुलिस अधीक्षक निकिता खट्टर ने अपने कार्यालय में नवपदोन्नत अधिकारी सोहनलाल के कंधे पर स्टार लगाकर उन्हें शुभकामनाएं दीं तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। एसपी निकिता खट्टर ने कहा कि पदोन्नति किसी भी पुलिसकर्मी के लिए गर्व और सम्मान का क्षण होने के साथ-साथ नई जिम्मेदारियों की शुरुआत भी है। उन्होंने अपेक्षा व्यक्त की कि नवपदोन्नत अधिकारी पहले से अधिक अनुशासन, ईमानदारी और समर्पण के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगे और आमजन की सेवा व सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देंगे। एसपी ने कहा कि पुलिस महकमे में प्रत्येक पद का अपना विशेष महत्व होता है। अधिकारी की कार्यशैली, व्यवहार और कर्तव्यनिष्ठा से ही खाकी की सफाईमक छवि जनता के बीच सुदृढ़ होती है। उन्होंने कहा कि यह तस्की सोहनलाल के अनुभव और पेशेवर कार्यकुशलता का सम्मान है। उन्हें पूरा विश्वास है कि वे भविष्य में भी विभाग की उम्मीदों पर पूरी तरह खरे उतरेंगे। पदोन्नति मिलने पर नवपदोन्नत सहायक उपनिरीक्षक सोहनलाल ने एसपी निकिता खट्टर का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि विभाग ने उन पर जो विश्वास जताया है, वे उस पर पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ खरा उतरने का प्रयास करेंगे।

युवक की हत्या मामले में सातवां आरोपी गिरफ्तार

फतेहाबाद। बालाजी कॉलोनी क्षेत्र में युवक की चाकू पोंपकर हत्या करने के मामले में कार्रवाई को आगे बढ़ाते हुए थाना शहर फतेहाबाद पुलिस ने सातवें आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान नसीब पुत्र पप्पू राम, निवासी भाटिया कॉलोनी, फतेहाबाद के रूप में हुई है। इस हत्याकांड में पुलिस अब तक कुल सात आरोपियों को गिरफ्तार कर सलाखों के पीछे भेज चुकी है। थाना प्रभारी निरीक्षक सुन्दरा ने बताया कि आजाद नगर निवासी सचिन कुमार ने पुलिस को शिकायत दी थी। शिकायत के अनुसार, 26 अप्रैल की रात उसका बड़ा भाई मोनू अपने दोस्तों के साथ बालाजी कॉलोनी में कीर्ति नगर मोड़ के पास बैठा बातचीत कर रहा था। उसी दौरान कुछ युवकों के साथ उसका झगड़ा हो गया। सूचना पाकर जब सचिन मौके पर पहुंचा, तो देखा कि आरोपी उसके भाई के साथ बुरी तरह मारपीट कर रहे थे। इसी बीच एक आरोपी ने मोनू की दाहिनी जांच पर चाकू से ताबड़तोड़ वार कर दिया, जबकि उसके साथी-साथियों ने डंडों व लात-घुंसों से हमला किया। गंभीर रूप से घायल मोनू को नागरिक अस्पताल फतेहाबाद ले जाया गया, जहां प्राथमिक इलाज के बाद चिकित्सकों ने उसे महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज, अग्रोहा रेफर कर दिया। हालांकि, अग्रोहा ले जाते समय रास्ते में ही मोनू ने दम तोड़ दिया था।

न्यूज़ डायरी

हेरोइन के साथ आदमपुर के दो तस्कर काबू सप्लाई देने वाला मुख्य आरोपी भी गिरफ्तार

फतेहाबाद। एंटी नारकोटिक सेल फतेहाबाद की टीम ने भट्ट कलां-खारखेड़ी मार्ग पर नाकाबंदी के दौरान मोटरसाइकिल सवार दो युवकों को 11.74 ग्राम हेरोइन के साथ रों हाथों गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपियों की पहचान शिव प्रकाश उर्फ सोनू और रवि कुमार निवासी गांव भाणा, तहसील आदमपुर के रूप में हुई है। पुलिस ने दोनों आरोपियों को अदालत में पेश कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है। वहीं, जांच आगे बढ़ते हुए पुलिस ने इस हेरोइन नेटवर्क के मुख्य सप्लायर राकेश निवासी भट्ट कलां को भी गिरफ्तार कर लिया है। एंटी नारकोटिक सेल फतेहाबाद के प्रमारी उप निरीक्षक वेदपाल ने बताया कि एसएसआई भूपेन्द्र सिंह की अशुवाई में पुलिस टीम बस अड्डा किरद्वान क्षेत्र में गश्त पर थी। इसी दौरान गुप्त सूचना मिली कि दो युवक मोटरसाइकिल पर भट्ट कलां की तरफ से हेरोइन लेकर गांव भाणा की ओर जा रहे हैं। इस पर पुलिस टीम ने भट्ट कलां से खारखेड़ी रोड पर स्थित श्री बालाजी इंटरनल टाइल फैक्ट्री के सामने नाकाबंदी कर वाहनो की चैकिंग शुरू की। कुछ ही देर बाद भट्ट कलां की ओर से आ रहे मोटरसाइकिल सवार युवकों ने पुलिस की नाकाबंदी देखकर वापस भागने का प्रयास किया। पुलिस टीम ने मुसौंदी दिखाते हुए घेराबंदी कर दोनों युवकों को मौके पर ही धर दबोचा। तलाशी के दौरान आरोपियों के कब्जे से 11.74 ग्राम हेरोइन बरामद हुई। गिरफ्तार आरोपियों से की गई कड़ाई से पूछताछ के बाद पुलिस मुख्य सप्लायर तक पहुंचने में सफल रही और भट्ट कलां निवासी मुख्य आरोपी राकेश उर्फ धोल को भी काबू कर लिया।

श्री गुरु रविदास महाराज की स्मृति में विहिध व लक्ष्मीबाई शक्ति ने निकाली शोभायात्रा

फतेहाबाद। संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास महाराज की पावन स्मृति में विश्व हिंदू परिषद जिला फतेहाबाद एवं श्री लक्ष्मीबाई शक्ति के तत्वाधान में शोभायात्रा श्रद्धा एवं उत्साह के साथ निकाली गई। शोभायात्रा शहर के प्रमुख बाजारों से होते हुए श्री गौरीशंकर मंदिर, चार मरला कॉलोनी पहुंची, जहां पवित्र कलश की विधिगत स्थापना की गई। शोभायात्रा की अगुवाई भाजपा महिला जिला अध्यक्ष डॉ. सुमन बजाज ने की। श्री गौरीशंकर मंदिर पहुंचने पर विश्व हिंदू परिषद जिला फतेहाबाद की ओर से सामूहिक रूप से शोभायात्रा का स्वागत किया गया। इस दौरान जिला सहमंत्री चन्द्रशेखर मिश्रा, बुध अध्यक्ष डॉ. अतार लाल बजाज, विजय अववाल, रूप मालती शक्ति प्रमुख डॉ. सुमन बजाज, विक्रम मराठी, जिला प्रचार प्रमुख राजेश पराशर, जिला संयोजक अरूण गोयल बजरंगी, नगर अध्यक्ष हरश्री वर्मा, नगर मंत्री रमणी शर्मा, अनिल महता, लक्ष्मी महता, सुनील महता तथा विक्की मराठी सहित अनेक कार्यकर्ता एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे। शोभायात्रा के दौरान श्रद्धालुओं ने संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास महाराज जी का स्मरण करते हुए उनके बर्मा मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। श्रद्धालुओं ने समाज में समानता, भाईचारे, सद्भाव और मानवता का संदेश दिया। आयोजन के दौरान धार्मिक वातावरण बना रहा और श्रद्धालुओं ने गुरु रविदास महाराज जी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की।

पुलिस चौकी टोहराना की टीम ने भाखड़ा नहर पटरी से 720 ग्राम गांजे सहित महिला तस्कर को किया काबू

फतेहाबाद। पुलिस चौकी चंडीगढ़ रोड टोहराना की टीम ने एक महिला को 720 ग्राम गांजे के साथ रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। पकड़ी गई आरोपी महिला की पहचान संतोष निवासी बाबा बूटा बस्ती, टोहराना के रूप में हुई है। चौकी प्रमारी उप निरीक्षक ओम प्रकाश ने बताया कि पुलिस टीम भाखड़ा नहर सिरसा बाव की पटरी पर बलियाला हेड की तरफ गश्त कर रही थी। इसी दौरान बलियाला हेड की तरफ से एक महिला हाथ में सफेद रंग का प्लास्टिक थैला लिए पैदल आती दिखाई दी। समने से पुलिस की गाड़ी आती देख महिला घबरा गई और उसने थैले को अपनी चुन्नी में लपेटकर बाजू के नीचे छुपाने का असफल प्रयास किया। महिला की संदिग्ध हरकतों को देखते हुए पुलिस टीम ने तुरंत महिला पुलिस कर्मचारी की मदद से उसे रोककर पूछताछ शुरू की। पूछताछ के दौरान उसने अपना नाम संतोष बताया। इसके पश्चात नियमानुसार महिला पुलिस कर्मचारी द्वारा ली गई तलाशी में उसके कब्जे से 720 ग्राम गांजा बरामद हुआ।

पुरानी रंजिश में मुकदमा वापस लेने की धमकी दे सुए से किया था हमला, मुख्य आरोपी अंकुश गिरफ्तार

फतेहाबाद। पुराना मुकदमा वापस लेने का दबाव बनाने, जान से मारने की धमकी देने तथा दुकानदार पर हथौं तोड़ने वाले सुए से हमला करवाने के आरोपों में टोहराना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए मुख्य आरोपी को काबू कर लिया है। पुलिस ने आरोपी अंकुश पुत्र दलन सिंह, निवासी समेग को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से वारदात में इस्तेमाल की गई मोटरसाइकिल भी जप्त कर ली है। आरोपी को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। थाना शहर टोहराना प्रमारी निरीक्षक संधीप ने बताया कि सैनी मोहल्ला टोहराना निवासी रविन्द्र ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायतकर्ता के अनुसार, 22 जुलाई की रात वह अपनी किराना की दुकान पर मौजूद था। इसी दौरान एक बाइक पर सवार होकर आए तीन युवकों ने उस पर आरोपी अंकुश के खिलाफ दर्ज पुराना केस वापस लेने का दबाव बनाया। जब रविन्द्र ने मुकदमा वापस लेने से साफ इनकार कर दिया, तो वे उसे अंजान भुगतान की धमकी देकर चले गए। पंडित ने बताया कि कुछ ही देर बाद आरोपी दुकान दुकान पर पहुंचे। इस दौरान आरोपी अंकुश दुकान से थोड़ी दूरी पर बाइक के पास खड़ा होकर निगरानी कर रहा था, जबकि उसके साथी अर्जुन ने दुकान में घुसकर मोनू तोड़ने वाले सुए से रविन्द्र के पैर व पैर पर ताबड़तोड़ वार कर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया था। वारदात के बाद घायल को तुरंत उपचार के लिए सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। घटना के बाद पुलिस ने पीड़ित की शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर जांच शुरू की थी।

खबर संक्षेप

एग्रीस्टैक किसान आईडी जल्द बनवाएं किसान

सिरसा। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा किसानों की कृषि संबंधी जानकारी एवं पहचान को डिजिटल रूप से दर्ज करने की दिशा में एग्रीस्टैक किसान आईडी एक महत्वपूर्ण पहल है। विभाग के उपनिदेशक डॉ. विनोद फौगाट ने अपील की है कि वे किसान अपनी एग्रीस्टैक किसान आईडी जल्द से जल्द बनवाना सुनिश्चित करें। डॉ. फौगाट ने बताया कि एग्रीस्टैक किसान आईडी किसानों की कृषि संबंधी जानकारी और पहचान को डिजिटल रूप से दर्ज करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

ज्ञान दीप प्रतियोगिता मे पुष्पा सिंगला रहे विजेता

सिरसा। सीनियर सिटीजंस वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन सिरसा द्वारा वरिष्ठ नागरिक दिवस के उपलक्ष्य में परिवार मिलन एवं अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया जिसमें पूर्व राज्यपाल महामहिम प्रो. गणेशीलाल मुख्यातिथि थे। संगम स्कूल, भरोखा के विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीतों की मनमोहक प्रस्तुतियों से समां बोध दिया। संस्था द्वारा आयोजित ज्ञान दीप प्रतियोगिता में गिरधारी लाल बराला, हरद्याल बेरी, राजेंद्र जालंधरा एवं पुष्पा सिंगला विजेता रहे।

महिला कालेज में प्रवेश का अंतिम अवसर कल

सिरसा। राजकीय महिला महाविद्यालय सिरसा में सत्र 2026-27 के लिए विभिन्न स्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने की इच्छुक छात्राओं के लिए दाखिले का अंतिम अवसर उपलब्ध है। महाविद्यालय की ओर से जारी सूचना के अनुसार 8 से 23 अगस्त तक प्रतिदिन फिजिकल कार्डसलिंग आयोजित की जा रही है। 23 अगस्त को इच्छुक छात्राएं बजे तक महाविद्यालय में उपस्थित होकर उपलब्ध सीटों के अनुसार प्रवेश प्रक्रिया पूरी कर सकती हैं।

15 ग्राम हेरोइन सहित तीन नशा तस्क़र काबू

सिरसा। पुलिस द्वारा नशा तस्क़रों के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत कार्रवाई करते हुए तीन युवकों को हजारों रुपए की 15 ग्राम 371 मिलीग्राम हेरोइन सहित गिरफ्तार किया है। एंटी नारकोटिक्स सेल सिरसा की एक पुलिस टीम गश्त व चौकिया के दौरान गांव नानकपुर में मौजूद थी। इस दौरान सामने से बाइक सवार एक युवक आता दिखाई दिया जो कि पुलिस के देखकर वापस मुड़ गया। पुलिस ने तालाशी में युवक के कब्जे से 8.370 मिलीग्राम हेरोइन बरामद हुई।

छात्र से मोबाइल छीनने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

फतेहाबाद। छात्र से मोबाइल फोन छीनने की वारदात का पर्दाफाश करते हुए रतिया पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपियों की पहचान अमनदीप सिंह निवासी अजीत नगर गंदा तथा सोमनाथ उर्फ सोमा निवासी बीराबदी के रूप में हुई है। थाना शहर रतिया प्रभारी उप निरीक्षक अशोक ने बताया कि गांव रत्ताखेड़ा निवासी छात्र शहजाद ने पुलिस को शिकायत दी थी। छात्र रतिया स्थित एक सेंटर में 12वीं कक्षा की ट्यूशन पढ़ने आता है।

नो पार्किंग जोन में खड़ी तीन गाडियों को क्रेन से उठाकर पहुंचाया थाने, 27 वाहनों के काटे चालान

रतिया। शहर की यातायात व्यवस्था को सुचारु बनाने और अतिक्रमण पर अंकुश लगाने के लिए ट्रैफिक पुलिस ने शुक्रवार को विशेष अभियान चलाया। इस दौरान नो पार्किंग क्षेत्र में बेतरतीब ढंग से खड़ी तीन गाडियों को क्रेन की मदद से उठाकर रतिया सिटी थाना पहुंचाया गया और उनके चालान काटे गए। इसके अलावा यातायात नियमों का उल्लंघन करने पर 27 अन्य वाहनों के भी चालान कर लगमग 25 हजार रुपये का जुर्माना वसूला गया। ट्रैफिक इंचार्ज भीम सिंह ने बताया कि अभियान के दौरान तीन वाहन नो पार्किंग जोन में खड़े मिले। इनमें से एक गाड़ी नए बस स्टैंड के सामने, दूसरी मुख्य बाजार क्षेत्र में तथा तीसरी भगत सिंह चौक के पास खड़ी थी। इन सभी वाहनों को क्रेन से हटवाकर थाने भिजवाया गया। विशेष अभियान के तहत नो पार्किंग के अलावा बिना हेल्मेट, ट्रिपल राइडिंग वालों पर भी शिकंजा कसा गया। पुलिस टीम ने ऐसे 27 वाहनों के मौके पर चालान काटे।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फ़ोन : 9315429403, 9253681005

कर्मचारी नेताओं की गिरफ्तारी पर डबवाली में एकत्रित कूड़ा बिखेरा
पुलिस पहरे में उठा कूड़ा, विरोध कर रहे कर्मचारियों को लिया हिरासत में

हड़ताल के कारण शहर की सड़कों, गलियों और बाजारों से आ रही है कचरे की भयानक बदबू

हरिभूमि न्यूज >>> सिरसा

जिला प्रशासन ने पुलिस की मौजूदगी में शनिवार को शहर में लगे कूड़े के ढेरों को उठाया। इस दौरान कूड़ा उठाने का विरोध कर रहे कुछ हड़ताली सफाई कर्मचारियों को हिरासत में लिया गया है। प्रशासन ने पुलिसबल की मौजूदगी में कचरा उठाने का अभियान शुरू किया। ट्रैक्टर-ट्रॉलियों और जैसीबी से विभिन्न डंपिंग प्वाइंटों से कचरा हटाया गया। इस दौरान सफाई कर्मचारी मौके पर पहुंचे और इसका विरोध किया, जिसके बाद पुलिस और कर्मचारियों के बीच नोकझोंक भी हुई। हड़ताली कर्मचारियों ने इस कार्रवाई के विरोध में सिटी थाना के बाहर धरने पर बैठ गए। धरने को कांग्रेस विधायक गोकुल सेतिया समर्थन देने पहुंचे।

सफाई कर्मचारियों की हड़ताल के कारण शहर की सड़कों, बाजारों और गलियों में पिछले 17 दिनों से सड़ रहे कचरे से बदबू आने लगी थी। सरकार और हड़ताली कर्मचारियों के बीच



सिरसा। डंपिंग प्वाइंट से कूड़ा उठाती जैसीबी व कर्मचारियों को हिरासत के बाद बस में ले जाते हुए।

फिलहाल कोई समझौता होता न देख प्रशासन को कार्रवाई के लिए मजबूर कर दिया। सफाई व्यवस्था को लेकर आम लोग परेशान थे। बीते दिवस नागरिक परिषद की पहल पर सर्वदलीय-सामाजिक बैठक हुई, जिसमें इस बात पर सहमति बनी थी कि प्रशासन अपने स्तर पर कूड़ा उठाता है तो हड़ताली कर्मचारी इसका विरोध नहीं करेंगे, लेकिन जैसे ही प्रशासन ने कूड़ा उठाने का प्रयास किया तो हड़ताली कर्मचारी मौके पर पहुंच गए और इसका विरोध किया। हालात बिगड़ने पर पुलिस को विरोध कर रहे सफाई कर्मचारियों को हिरासत में लेना पड़ा। इस दौरान पुलिस और कर्मचारियों के बीच नोकझोंक की स्थिति बनी। वहीं, नगर पालिका कर्मचारियों संघ से जुड़े नेताओं को



हिरासत में लिए जाने की भी सूचना पर मामला और बिगड़ गया। गुस्साए कर्मचारी सिटी थाना में पहुंचे और इसका विरोध करते हुए धरना शुरू कर दिया। सफाई कर्मचारियों की गिरफ्तारी से आक्रोशित हुए डबवाली नगरपरिषद पर पुलिस को विरोध कर रहे सफाई कर्मचारियों ने एकत्रित किए गए कूड़े को सड़कों पर बिखेर दिया। इससे चारों तरफ गंदगी का आलम हो गया। सफाई कर्मचारियों का आरोप है कि सरकार उनकी मांगों के प्रति उदासीन है।

सभी पेंशनर्स के लिए कैशलेस मेडिकल सुविधा तुरंत लागू हो: गुरदीप सैनी

■ रानिया में हुई स्टेट पेंशनर्स की ब्लॉक स्तरय बैठक

हरिभूमि न्यूज >>> सिरसा

हरियाणा स्टेट पेंशनर्स समाज की एक ब्लॉक स्तरीय बैठक रानियां के स्थानीय स्कूल के कॉफ्रेंस हॉल में किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रदेश उपाध्यक्ष गुरदीप सैनी व जिलाध्यक्ष राजेंद्र मोहन गुप्ता ने की। स्कूल प्रधानाचार्य शमशेर शर्मा ने बुक्के देकर एवं रानियां ब्लॉक द्वारा सरोपा देकर अतिथियों का सम्मान किया। रानियां ब्लॉक प्रधान बलवंत सिंह ने बताया कि इस ब्लॉक स्तरीय बैठक में पेंशनर्स की विभिन्न समस्याओं



सिरसा। हरियाणा स्टेट पेंशनर्स समाज की बैठक को संबोधित करते।

पर विचार-विमर्श किया गया। सेवानिवृत्त प्राध्यापक बूटा सिंह काहलौ ने कहा कि मैं पेंशनर्स समाज के साथ हूं और सभी मीटिंग्स में भाग लूंगा। गुरदीप सैनी एवं राजेंद्र मोहन गुप्ता ने पेंशनर्स समाज को

सभी मांगों पर विस्तार से चर्चा की और पेंशनरों की मांग को उठाया। इस अवसर पर जगमिंद्र सिंह, श्रीराम निरानिया, कुलवंत सिंह, रघबीर सिंगला, नीलकंठ शास्त्री, महेंद्र सिंह, बूटा सिंह काहलौ आदि रहे।

माखड़ा नहर की पटरी पर दूध विक्रेता से लूट

फतेहाबाद। रास्ता रोककर मारपीट करने, नकदी तथा मोबाइल फोन छीनने की वारदात में कार्रवाई करते हुए थाना सदर टोहाना पुलिस ने तीसरे आरोपी को भी गिरफ्तार कर लिया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान रविन्द्र सिंह उर्फ रवि निवासी लेहलकलां, जिला संगरूर, पंजाब के रूप में हुई है। सूरजमल ने पुलिस को दी शिकायत में बताया था 29 जून की सुबह जब वह दूध बेचकर भाखड़ा नहर की पटरी के रास्ते अपने घर-खेत की ओर लौट रहा था, तभी एक बाइक पर मुंह ढके तीन युवक आए। और अपनी बाइक से उसका रास्ता रोक कर उसके साथ मारपीट शुरू कर दी। इसके बाद पीड़ित से 8 हजार की नकदी, उसका मोबाइल फोन और बाइक की चाबी छीनकर फरार हो गए थे।

बिजली निगम के खिलाफ कन्हड़ी के लोगों में आक्रोश, संघर्ष समिति गठित

■ बिना नोटिस छापेमारी और फर्जी शिकायतों का आरोप

हरिभूमि न्यूज >>> फतेहाबाद

बिजली निगम के एक जेई के रवैये और बिना किसी पूर्व सूचना के की गई छापेमारी से गुस्साए गांव कन्हड़ी के ग्रामीण अब लामबंद हो गए हैं। शनिवार को गांव की मुख्य चौपाल में छत्तीस बिरादरी की एक पंचायत का आयोजन किया गया, जिसमें ग्रामीणों ने बिजली विभाग की कार्यप्रणाली पर कड़ा रोष जताया और सर्वसम्मति से एक संघर्ष समिति का गठन किया। पंचायत को संबोधित करते हुए भगत सिंह व

अन्य ग्रामीणों ने बताया कि बिजली विभाग के जेई ने बिना किसी पूर्व नोटिस और गांव के किसी भी मौजिज व्यक्ति को साथ लिए बिना, बिना नंबर की गाडियों व मोटरसाइकिलों के साथ गांव में अचानक छापेमारी की। ग्रामीणों का आरोप है कि इस कार्रवाई से गांव के शांतिपूर्ण माहौल को जानबूझकर खराब करने का प्रयास किया गया। ग्रामीणों ने आक्रोश जताते हुए कहा कि जेई ने गांव के कुछ निर्दोष युवाओं और ग्रामीणों के खिलाफ सरकारी काम में बाधा डालने की झूठी शिकायत पुलिस को दी है, जबकि उनका जेई से सामना तक नहीं हुआ था।

सत्ता साधन है, लक्ष्य राष्ट्र निर्माण: जुयाल

■ जुयाल ने बूथ स्तर के कार्यकर्ता पर फोकस का दिया संदेश

हरिभूमि न्यूज >>> सिरसा

भाजपा के नवनियुक्त जिला प्रभारी एवं हरको बैंक के चेयरमैन भारत भूषण जुयाल का नए दायित्व के बाद सिरसा में पहला आगमन महज औपचारिक स्वागत कार्यक्रम बनकर नहीं रह गया। उनके संबोधन ने लंबे समय से संगठनात्मक चुनौतियों से जूझ रहे कार्यकर्ताओं के बीच नई ऊर्जा और उम्मीद का संचार किया। करीब चार दशक के संगठनात्मक अनुभव के साथ पहुंचे जुयाल ने अपने पहले ही संबोधन में कार्यकर्ताओं को चुनौती लक्ष्य के साथ-साथ संगठन की बुनियाद यानी बूथ स्तर के कार्यकर्ता पर



सिरसा। कार्यकर्ताओं को संबोधित करते भाजपा जिला प्रभारी भारत भूषण जुयाल।

फोकस करने का संदेश दिया। जुयाल ने अपने संबोधन में साफ शब्दों में कहा कि किसी व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र के लिए काम करना है। उन्होंने सत्ता को लक्ष्य नहीं, बल्कि जनसेवा और राष्ट्र निर्माण का माध्यम बताया। उनके इस संदेश ने मंच से लेकर कार्यकर्ताओं के बीच तक माहौल

को खासा ऊर्जावान बना दिया। जुयाल ने कहा कि संगठन में आने वाला हर प्रभारी एक दिन चला जाता है, लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि अपने कार्यकाल में वह संगठन के लिए क्या करके जाता है। उन्होंने कार्यकर्ताओं को इतिहास में अपना नाम दर्ज कराने के लिए जीत को लक्ष्य बनाने का आह्वान किया।

मुख्यमंत्री के नेतृत्व में रतिया में होगी विकास रैली : विधायक

■ एमएलए जरनैल सिंह ने किया 14 गांवों का दौरा

हरिभूमि न्यूज >>> रतिया

विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न गांवों और ढाणियों के जनसंपर्क अभियान के तहत विधायक जरनैल सिंह ने हल्के के 14 गांवों का दौरा किया। इस दौरान ग्राम पंचायतों, प्रशासनिक अधिकारियों और स्थानीय जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में विकास कार्यों और जनसमस्याओं पर विस्तार से चर्चा की गई। विधायक जरनैल सिंह ने चनकोठी, खुम्बर, खुनन, नकटा, मानकपुर, बनावाली सोत्र, मूसा अहली, कारियां, नूरकी आहली, चुपे आहली, ढाणी ईशर,

ढाणी ढाका, मलहड़ तथा ढाणी छतरियां में जनसंवाद कार्यक्रम आयोजित किए। बैठकों में गांवों की मूलभूत सुविधाओं, लंबित विकास परियोजनाओं और ग्रामीणों की समस्याओं पर विचार-विमर्श कर उन्हें शीघ्र पूरा करने के निर्देश दिए गए। विधायक ने बताया कि हलके के विकास को लेकर वे मुख्यमंत्री से लगातार संपर्क में हैं। मुख्यमंत्री के सहयोग से क्षेत्र में करोड़ों रुपये की विकास योजनाओं पर कार्य शुरू हो चुका है। उन्होंने कहा कि विकास कार्यों को और अधिक रफ्तार देने के लिए जल्द ही मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को रतिया आमंत्रित कर एक विशाल रैली आयोजित करने का प्रयास किया जाएगा।

सिरसा-फतेहाबाद हरिभूमि 10

17 दिन से कचरे में शहर, संगठनों के धरने में जनता का मुद्दा गायब



फतेहाबाद। जवाहर चौक में धरना देते विभिन्न जनसंगठनों के कार्यकर्ता।

फोटो : हरिभूमि

■ सफाई कर्मचारियों की हड़ताल जारी, गलियों और सड़कों कचरे से अटीं

हरिभूमि न्यूज >>> फतेहाबाद

नगर परिषद के सफाई कर्मचारियों की हड़ताल शनिवार को 17वें दिन भी जारी रही। लगातार 17 दिनों से सफाई व्यवस्था ठप होने के कारण शहर की गलियों, मुख्य सड़कों और सार्वजनिक स्थानों पर कचरे के ढेर लगे हैं। कई जगह हालात डंपिंग ग्राउंड जैसे हो गए हैं। कचरे से उठती बदबू और सड़ांध के बीच लोगों को आवाजाही करने में परेशानी हो रही है। लंबे समय से सफाई व्यवस्था प्रभावित होने के बावजूद समाधान नहीं निकलने से शहरवासियों में नाराजगी बढ़ती जा रही है। इस बीच सफाई व्यवस्था बहाल कराने की मांग को लेकर शनिवार को जवाहर चौक पर विभिन्न जन संगठनों ने

जनता के नाम पर धरना पर कर्मचारियों की मांगों की पैरवी

जवाहर चौक पर आयोजित धरने में शहर की सफाई व्यवस्था का मुद्दा प्रमुखता से उठाया गया, लेकिन मंच से ज्यादातर वक्ताओं ने हड़ताली कर्मचारियों की मांगों का समर्थन किया। लोगों का कहना है कि शहर में 17 दिन से कचरा जमा है, ऐसे में सबसे बड़ा सवाल सफाई व्यवस्था को तत्काल बहाल कराने का है। नागरिकों को उम्मीद थी कि धरने में कचरा उठाने, वैकल्पिक सफाई व्यवस्था और शहर को गंदगी से राहत दिलाने के ठोस उपायों पर चर्चा होगी।

मांगों पर फैसला न होने तक आंदोलन रहेगा जारी

सफाई कर्मचारियों की हड़ताल शनिवार को 17वें दिन में प्रवेश कर गई है। संघ के फतेहाबाद इकाई प्रधान नरेश राणा, जिला प्रधान विजय ढाका व वीरू रती ने कहा कि सरकार मांगों का समाधान करने के बजाय जानबूझकर आंदोलन को लंबा खींच रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि लोगों को कूड़े के ढेरों के बीच सड़ने के लिए छोड़ दिया गया है, जिसका खामियाजा सरकार को भुगतना पड़ेगा।

23 अगस्त तक बारिश की संभावना

कृषि मौसम विज्ञान विभाग, चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार की ओर से जारी पूर्वानुमान के अनुसार हरियाणा में मानसूनी हवाओं की सक्रियता बढ़ने की संभावना है। इसके चलते 23 अगस्त तक राज्य के ज्यादातर क्षेत्रों में हवाओं और गरज-चमक के साथ हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना जताई गई है। कुछ स्थानों पर तेज बारिश भी हो सकती है। बादल छाए रहने से दिन के तापमान में हल्की गिरावट आने की संभावना है।

बारिश हुई तो किसानों को मिलेगी राहत

किसानों को उम्मीद है कि आगामी दिनों में यदि अच्छी बारिश होती है तो धान के खेतों में नमी की कमी दूर होगी और दृबूखेल से सिंचाई का दबाव कम होगा। लगातार सिंचाई के कारण बढ़ रही लागत से भी किसानों को राहत मिल सकती है। फिलहाल खेतों में फसल खड़ी है और किसान बारिश का इंतजार कर रहे हैं।

बादल छाए रहते हैं, लेकिन बरस नहीं रहे

जिले में पिछले कई दिनों से आसमान में बादल दिखाई दे रहे हैं, लेकिन पर्याप्त बारिश नहीं हो रही। इससे किसानों की चिंता बढ़ती जा रही है। धान की फसल इस समय खेतों में पर्याप्त नमी और पानी की मांग कर रही है। बारिश नहीं होने पर किसानों को बार-बार दृबूखेल चलाकर खेतों की सिंचाई करनी पड़ रही है। जिन किसानों के पास नहरी पानी की सुविधा नहीं है, उनके लिए स्थिति ज्यादा चुनौतीपूर्ण बनी हुई है। बारिश के आगम में धान की फसल को पानी उपलब्ध कराने के लिए किसान लगातार सिंचाई कर रहे हैं। इससे बिजली और डीजल का खर्च बढ़ रहा है।

23 अगस्त तक प्रदेश के ज्यादातर क्षेत्रों में हल्की से मध्यम बारिश की संभावना जताई है।



फतेहाबाद। घुमड़-घुमड़ कर आए बादल, पूरा दिन यही लुका-छिपी का खेल जारी।

अब आसमान पर टिकी है। बारिश नहीं होने से धान के खेतों में नमी बनाए रखने के लिए किसानों को

दृबूखेल का सहारा लेना पड़ रहा है। इससे बिजली, डीजल और सिंचाई की लागत बढ़ रही है।

आपसी संवाद का बदलता मिजाज खो ना जाए रिश्तों की मिठास



कवर स्टोरी
रशीधरा भटनागर

भाषा केवल बोलने का माध्यम नहीं, मनुष्य के भीतर से दूसरे मनुष्य तक जाने वाली वह महीन डोर है, जिसमें समय, संस्कार, स्मृतियाँ और संबंध एक साथ बंधे रहते हैं। किसी समाज की भाषा को सुनकर उसके समय की धड़कन पहचानी जा सकती है। शब्द बदलते हैं तो केवल शब्द नहीं बदलते, उनके साथ हमारे व्यवहार, हमारी निकटताएँ और कभी-कभी हमारी संवेदनाएँ भी अपना रूप बदल लेती हैं।

भाषा में होता था माधुर्य

एक समय था, जब मोहल्ला एक परिवार जैसा होता था और मोहल्ले की अपनी एक लोकभाषा हुआ करती थी। वह किसी व्याकरण की पुस्तक में नहीं मिलती थी, फिर भी उसमें जीवन का पूरा व्याकरण समाया होता था। पड़ोस की चाची, गली के काका, सामने वाले घर की दादी, दूध वाले भैया, डाकिया चाचा। रक्त-संबंध न होते हुए भी भाषा ने सबको रिश्तों में बांध रखा था। किसी के घर से पकवान निकला तो कटोरी पड़ोस में पहुँची। किसी के यहां कोई दुःख-परेशानी आई तो अगले बरताने से आवाज आती, 'कुछ चाहिए तो बताना।' किसी बुजुर्ग को देखते ही बच्चे का स्वर अपने आप नीचे हो जाता था। 'आप', 'आइए', 'बैठिए', 'खाइए', 'कैसे हैं?... ' ये केवल शब्द नहीं बल्कि बुझने के अस्तित्व को स्वीकार करने के संस्कार हुआ करते थे। मोहल्ले की उस भाषा में एक सहज माधुर्य था। उसमें आत्मीयता थी, पर आत्मीयता की भी एक मर्यादा थी। मजाक था, मगर अपमान नहीं। असहमति थी,

मगर संबोधन में सम्मान बचा रहता था। आज मोहल्ले सिकुड़कर अपार्टमेंट हो गए हैं और चौपाल स्क्रीन पर चली गई है। पड़ोसी का चेहरा कई बार वर्षों तक दिखाई नहीं देता, जबकि दूर देश में रहने वाला कोई डिजिटल मित्र प्रतिदिन बातचीत का हिस्सा बना रहता है। भाषा भी उसी के साथ बदल गई है।

नई पीढ़ी की बेलाग भाषा

आज जब हम नई पीढ़ी की भाषा की बात करते हैं, तो चर्चा केवल 'हाय', 'हेलो' 'ओके', 'कूल' 'ब्रो' या डिजिटल संक्षिप्तियों तक सीमित नहीं रह सकती है। इस भाषा का एक दूसरा, अधिक चिंताजनक पक्ष है बातचीत में बढ़ती बेलाग अशिष्टता, गाली-गलौज और अपशब्दों का सहज इस्तेमाल।

लेकिन इसे केवल 'आज के बच्चों के संस्कार खराब हैं' कहकर समझ लेना समस्या को बहुत छोटा कर देना होगा। आज युवाओं की



बातचीत में अपशब्दों का इस्तेमाल कई संदर्भों में सामान्य होता दिखाई देता है। शोध यह संकेत देते हैं कि युवाओं में अपशब्दों का प्रयोग केवल 'असंस्कारी' होने का परिणाम नहीं होता। कभी यह भावनाओं को तीव्रता से व्यक्त करने, कभी समूह में स्वीकार्यता पाने और कभी अपनी बात

घर-परिवार हो, पड़ोसी, मित्र-मंडली, सहकर्मी हों या रिश्तेदार, सभी से संबंध, हमारे बातचीत के तरीके और शब्दों पर निर्भर करते हैं। समय के साथ शब्द, संबोधन, भाषा की चाल बदलना स्वाभाविक है, लेकिन भाषा से यदि सम्मान और मर्यादा का भाव कम होने लगे तो रिश्तों की ऊष्मा, उसकी मिठास खोने का डर मंडराने लगता है। ऐसे में हम सभी को सजग होने की जरूरत है।



को अधिक प्रभावशाली बनाने का माध्यम बन जाता है। सोशल मीडिया ने युवाओं को अपनी बात खुलकर रखने के बहुत अधिक अवसर दिए हैं और इसके साथ अशिष्ट भाषा की दुर्यता भी बढ़ी है। यानी समस्या केवल शब्दों की नहीं, शब्दों के सामान्य हो जाने की है। दरअसल, जब किसी शब्द को बार-बार सुना जाता है, तो उसका चौंकाने वाला प्रभाव कम होने लगता है। जो कल असभ्य माना जाता था, वह आज मजाक का हिस्सा बन जाता है। और जो मजाक में कहा गया था, वह धीरे-धीरे रोजमर्रा की भाषा में प्रवेश कर जाता है।

समझना होगा महत्वपूर्ण अंतर

हर अपशब्द हिंसा नहीं है और हर अपशब्द किसी व्यक्ति को अपमानित करने के लिए नहीं बोला जाता। भाषा-विज्ञान और मनोविज्ञान के अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि लोग कभी-कभी ऐसे शब्दों का इस्तेमाल भावनात्मक तीव्रता, तनाव या आश्चर्य व्यक्त करने के लिए करते हैं। लेकिन किसी की



गरिमा को चोट पहुंचाने वाली गाली और मित्रों के बीच भावनात्मक विस्मय व्यक्त करने वाला अपशब्द एक ही बात नहीं है। यहीं भाषा की नैतिकता का प्रश्न खड़ा होता है। आखिर यह भाषा आई कहां से? इस बदलाव के पीछे कई परतें हैं।

डिजिटल दुनिया: सोशल मीडिया, ऑनलाइन गेमिंग, छोटे वीडियो और मीम संस्कृति में तीखी, उत्तेजक और चौंकाने वाली भाषा अकसर मनोरंजन का हिस्सा बन जाती है।

साधियों का प्रभाव: किशोरावस्था में समूह से जुड़ना बहुत महत्वपूर्ण होता है। कोई शब्द मित्र-मंडली में सामान्य है तो उसे न बोलना कई बार 'अलग' दिखाई देना हो सकता है। इसलिए युवा भाषा केवल व्यक्तिगत पसंद नहीं, समूह की पहचान भी बन जाती है।

घर की भाषा: हम अकसर बच्चों की भाषा पर अंगुली उठाते हैं, लेकिन यह भूल जाते हैं कि भाषा सीखने की पहली पाठशाला घर है। यदि घर में क्रोध का पहला उतर गाली है, तो बच्चे के लिए गाली केवल निषिद्ध नहीं, समूह की पहचान भी बन जाती है।

ध्यान रखने की प्रवृत्ति: बेलाग भाषा कई बार 'कूल', 'बोल्ड' या 'बेबाक' दिखने का माध्यम बन जाती है। इसीलिए कुछ युवा जान-बूझकर ऐसी भाषा चुनते हैं। **संवाद का घटता धैर्य:** जब बातचीत छोटी होती जाती है, तो भाव व्यक्त करने के लिए शब्दों की जगह तीव्र शब्द लेने लगते हैं। इन सभी कारणों को समझने के बाद विकृत होती भाषा के लिए केवल नई पीढ़ी को दोष देना उचित नहीं होगा, क्योंकि भाषा का यह परिवर्तन केवल युवाओं ने पैदा नहीं किया है। उन्हें यह भाषा समाज ने दी है।

भाषा में बनी रहे मधुरता-मर्यादा

हमें पुरानी भाषा को हूबहू वापस लाने की आवश्यकता नहीं है। नई पीढ़ी को अपनी भाषा होगी ही। जरूरत केवल इतनी है कि आधुनिकता के साथ माधुर्य भी रहे और बेबाकी के साथ मर्यादा भी। प्रश्न शब्द का नहीं, उसके पीछे मौजूद मन का है। हम न भूलें कि शब्दों में अद्भुत शक्ति होती है। वे रिश्तों में मिठास घोल सकते हैं तो हमेशा के लिए खटास भी भर सकते हैं। *

मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाएं भाई-बहन का भावनात्मक संबल

हर परिवार में भाई-बहन का रिश्ता सबसे अनोखा और प्यारा होता है। उम्र के हर दौर में भाई-बहन का एक-दूसरे को दिया जाने वाला भावनात्मक संबल, मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाने में भी बड़ी भूमिका निभाता है। इस बारे में आप विस्तार से जरूर जानना चाहेंगे।

पॉजिटिव इफेक्ट नैसी गुप्ता

बदली जीवनशैली, बढ़ता काम का दबाव, सोशल मीडिया की तुलना और अकेलेपन की भावना आज मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारण बन चुके हैं। ऐसे समय में परिवार का भावनात्मक सहयोग, हर व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी ताकत साबित होता है। परिवार में भाई-बहन का रिश्ता सबसे अलग और प्यारा होता है, क्योंकि यह केवल बचपन की यादों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि जीवन के हर पड़ाव पर भावनात्मक सुरक्षा, भरोसा और अपनापन भी देता है। भाई-बहन का रिश्ता दोनों के मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भावनात्मक सुरक्षा: बचपन के बाद टीनएज, यंगएज और मिडएज में भाई-बहन दोस्त जैसे हो जाते हैं, जिससे वे बिना किसी झिझक के अपनी भावनाएं साझा कर लेते हैं। जब जीवन में तनाव, असफलता या किसी तरह की परेशानी आती है, तो भरोसेमंद भाई या बहन का साथ मानसिक बोझ को काफी हद तक कम कर देता है। यह भावनात्मक सुरक्षा, चिंता और अकेलेपन की भावना को घटाने में मदद करती है।

तनाव होता है कम: मानसिक तनाव के दौरान किसी भरोसेमंद व्यक्ति से बात करना काफी राहत देता है। भाई-बहन एक-दूसरे की परिस्थितियों, स्वभाव और पारिवारिक पृष्ठभूमि को अच्छी तरह समझते हैं। इसलिए वे बिना जज किए सुनते हैं और व्यावहारिक सलाह भी देते हैं। यह सहयोग तनाव से बाहर निकलने में सहायक हो सकता है। **अकेलापन महसूस हो कम:** आज के समय में अनेक युवक-युवतियां, परिवार से दूर रहकर पढ़ाई



या नौकरी करते हैं। ऐसे में अकेलेपन की समस्या बढ़ सकती है। ऐसे में यदि भाई-बहन के साथ नियमित बातचीत होती रहे, तो दूरी के बावजूद भावनात्मक जुड़ाव कायम रहता है। फोन कॉल, वीडियो कॉल या संदेश भी मानसिक सुकून देने का काम करते हैं। **बढ़ता है आत्मविश्वास:** हर व्यक्ति के जीवन में ऐसे पल आते हैं जब उसे अपनी क्षमता पर संदेह होने लगता है। ऐसे समय में भाई या बहन का प्रोत्साहन आत्मविश्वास को दोबारा मजबूत कर सकता है। बचपन से एक-दूसरे की खूबियाँ और कमजोरियों को जानने के कारण, उनका उत्साहवर्धन अधिक प्रभावी महसूस होता है।

कठिन समय में सहारा: मानसिक स्वास्थ्य केवल भावनाओं तक सीमित नहीं है। बीमारी, आर्थिक परेशानी या पारिवारिक संकट के समय भाई-बहन, भावनात्मक समर्थन के साथ-साथ व्यावहारिक मदद भी करते हैं। जिम्मेदारियां बांटना, निर्णय लेने में साथ देना और समस्याओं का समाधान ढूंढना मानसिक दबाव को कम करने में मदद करता है।

मिलती है सकारात्मक ऊर्जा: बचपन की सुखद यादें मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं। भाई-बहन के साथ बिताए गए खेल, त्योहार, शरारतें और पारिवारिक अनुभव कठिन समय में भी व्यक्ति को भावनात्मक रूप से मजबूत महसूस कराते हैं। कहा जा सकता है कि भाई-बहन का रिश्ता केवल खून का रिश्ता नहीं, बल्कि जीवन भर साथ रहने वाला भावनात्मक सहारा भी है। बदलते समय में जब मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियां लगातार बढ़ रही हैं, तब यह रिश्ता हमें अपनापन और आत्मविश्वास देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। * (क्लिनिकल साइकोलाजिस्ट निर्मल वर्मा से बातचीत पर आधारित)

रिश्ता बनाए रखें मजबूत

भाई-बहन के बीच केवल रिश्ता होना ही पर्याप्त नहीं होता है, बल्कि मजबूती बनाए रखने के लिए उसे समय देना भी जरूरी है। व्यस्त दिनचर्या के बावजूद नियमित बातचीत करें, एक-दूसरे की उपलब्धियों की सराहना करें, मतभेद होने पर संवाद बनाए रखें और छोटी-छोटी बातों को लंबे समय तक मन में न रखें। स्वस्थ संवाद रिश्ते को मजबूत बनाता है और मानसिक संतुलन बनाए रखने में भी मदद करता है। इसके साथ ही रक्षाबंधन, जन्मदिन या परिवार के छोटे-छोटे समारोह, भाई-बहन को फिर से करीब लाने का अवसर देते हैं। ऐसे अवसरों को मिस न करें। इस दौरान साथ समय बिताना, पुरानी यादें साझा करना, उत्साह के पल बिताना और एक-दूसरे का हाल-चाल जानना भावनात्मक जुड़ाव को मजबूत करता है। कई परिवारों में भाई-बहनों के बीच तुलना की जाती है, जिससे तनाव, ईर्ष्या और आत्मसमझन से जुड़ी समस्याएं पैदा हो सकती हैं। इसके बजाय एक-दूसरे की सफलता का सम्मान करना और शुभिकल समय में सहयोग देना रिश्ते को अधिक सकारात्मक बनाता है। भाई-बहन के बीच रखे संबंध मानसिक स्वास्थ्य के लिए हमेशा लाभदायक होते हैं।



गजल
ओम निश्चल

राखी आ गई

फिर उमड़ आई बरन की याद राखी आ गई
फिर से पकवानों में आया स्वाद राखी आ गई

थाल में कुमकुम और रोली सज गई
हृदय में उठ रहा है आह्लाद राखी आ गई

गुनगुनाने-सा लगा है फिर ये घर
फिर हुआ है नायक आबाद राखी आ गई

चैनलों पर गीत गाए जा रहे
छंट गया है जेलन से श्रवसाद राखी आ गई

बंध गई हैं राखियां फिर हाथ में
बरन-भाई कर रहे संवाद राखी आ गई

एक धागे में जो चाहे बांध लो
भाईघरे का यही मरजाद राखी आ गई

लघुकथाएं

शदी के कुछ दिन बाद ही विदेश जा बसी बहू ने, सुबह-सुबह फोन की घंटी बजते ही अनमने मन से अपनी सास का कॉल रिसीव किया, बोली, 'प्रणाम मां जी, कैसी हैं आप?' सासू मां बोलीं, 'अरे बहू, रक्षाबंधन पर अपने भाई की राखी भेजना मत भूलना। शदी के बाद पहली राखी है, तुम्हारे घर पर सब इंतजार करेगे।' 'जी मां जी, भेज दूंगी, आप चिंता ना करें।' उसने सधी-सपाट आवाज में जवाब दिया और फोन रखते ही सोचने लगी, 'फोन, चैट, वाट्सएप सब तो चलता ही रहता है, मैं कौन-सी भाई से साल में एक बार मिलती हूं? इस साल ही तो दूर आई हूं। राखी भेजने की औपचारिकता करना ही क्या जरूरी है?' बाद में वह घर-ऑफिस के कामों में ऐसा उलझी कि यह भूल ही गई रक्षाबंधन है कब? रक्षाबंधन के दिन सुबह-सुबह भाई ने अपनी कलाई पर सजी सुंदर राखी की फोटो भेजी और एक प्यारा-सा संदेश भी। 'कितना खुश हूं मैं कि वहां जाकर भी तुम्हें राखी का त्योहार याद रहा, अपने भाई के लिए स्नेह की डोर भेजना न भूलो। देख तो दूर रहकर भी हमारे बीच कभी दूरियां नहीं आएंगी। यह रेशमी धागा हमें हमेशा बांधे रखेगा।' फिर फोन पर बात हुई तो भाई-बहन दोनों का गला रंध गया। आंखों में नमी लिए खुशी से कांपते हाथों से उसने सासू मां को फोन लगाया तो उन्होंने

वृद्धाश्रम में रहने वाले एक बुजुर्ग रोज सुबह सबसे पहले वहां का उपस्थिति रजिस्टर खोलते और कांपते हाथों से अपने नाम के सामने हस्ताक्षर करते थे। एक दिन वहां मौजूद एक स्वयंसेवक ने उत्सुकता से पूछा, 'अंकलजी, यहां तो कोई रोज जांच भी नहीं करता, फिर आप हर दिन रजिस्टर में हस्ताक्षर क्यों करते हैं?' बुजुर्ग हल्का-सा मुस्कुराए और बोले, 'आदत है बेटा बरसों पुरानी आदत।' कुछ पल चुप रहने के बाद उनकी आंखें कहीं दूर टिक गईं, फिर धीमे स्वर में बोले, 'पूरी जिंदगी बैंक के कागजों पर, जमीन के दस्तावेजों पर, मकान के रजिस्ट्री पेपर्स पर, न जाने कितनी बार हस्ताक्षर करता प्रा। हर हस्ताक्षर किसी न किसी जिम्मेदारी या अधिकार का प्रतीक था। लेकिन जिस दिन आखिरी

कच्ची डोर



चहकते हुए पूछा, 'राखी बांध ली भाई ने?' 'जी मां जी, पर...' बहू आगे कुछ पूछती, उधर से सास बोली, 'अरे बहू, राखी मैंने भेजी थी। चार दिन पहले ही राजेश ने बताया कि तुम राखी नहीं भेज पाई हो।' कुछ ठहरकर उन्होंने फिर कहा, 'बहू, कच्ची डोर से बंधे रिश्ते भी टूटते नहीं, बस यह डोर कच्ची ना पड़े, इतना ख्याल रखना जरूरी होता है।' *

हस्ताक्षर



बार समझा- सबसे कठिन हस्ताक्षर वे नहीं होते जो संपत्ति बांटते हैं, बल्कि वे होते हैं, जो हर दिन खुद के अस्तित्व का प्रमाण देते हैं। *

कृति आर.के. जैन

समाप्त होता जा रहा है। करुणा वही परिवर्तनकारी शक्ति है, जो हमें इन समस्याओं से उबार सकती है। किताब में करुणा की नई परिभाषा से हम रूबरू होते हैं। करुणा कोई मामूली भावना नहीं बल्कि हमें बड़ी से बड़ी समस्या के समाधान तक पहुंचाने वाली ताकत है। न्याय की आत्मा है, बुद्धि का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है। लेखक ने करुणा के इतने आयामों से हमारा परिचय कराया है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। किस तरह जीवन के हर क्षेत्र में करुणा को लागू कर हम एक खुशहाल जिंदगी जी सकते हैं? किस तरह करुणा को मापा जा सकता है और किस तरह इसे अपने भीतर बढ़ाया भी जा सकता है? कुल मिलाकर करुणा में एक बेहतर दुनिया के निर्माण की शक्ति निहित है। *

किताब: करुणा-समाधान की शक्ति, लेखक: कैलाश सत्यार्थी, अनुवाद: आशुतोष गर्ग, मूल्य: 399 रुपए, प्रकाशक: हार्पर हिंदी, गुप्तग्राम

कच्ची डोर



चहकते हुए पूछा, 'राखी बांध ली भाई ने?' 'जी मां जी, पर...' बहू आगे कुछ पूछती, उधर से सास बोली, 'अरे बहू, राखी मैंने भेजी थी। चार दिन पहले ही राजेश ने बताया कि तुम राखी नहीं भेज पाई हो।' कुछ ठहरकर उन्होंने फिर कहा, 'बहू, कच्ची डोर से बंधे रिश्ते भी टूटते नहीं, बस यह डोर कच्ची ना पड़े, इतना ख्याल रखना जरूरी होता है।' *

हस्ताक्षर



बार समझा- सबसे कठिन हस्ताक्षर वे नहीं होते जो संपत्ति बांटते हैं, बल्कि वे होते हैं, जो हर दिन खुद के अस्तित्व का प्रमाण देते हैं। *

कृति आर.के. जैन

समाप्त होता जा रहा है। करुणा वही परिवर्तनकारी शक्ति है, जो हमें इन समस्याओं से उबार सकती है। किताब में करुणा की नई परिभाषा से हम रूबरू होते हैं। करुणा कोई मामूली भावना नहीं बल्कि हमें बड़ी से बड़ी समस्या के समाधान तक पहुंचाने वाली ताकत है। न्याय की आत्मा है, बुद्धि का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है। लेखक ने करुणा के इतने आयामों से हमारा परिचय कराया है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। किस तरह जीवन के हर क्षेत्र में करुणा को लागू कर हम एक खुशहाल जिंदगी जी सकते हैं? किस तरह करुणा को मापा जा सकता है और किस तरह इसे अपने भीतर बढ़ाया भी जा सकता है? कुल मिलाकर करुणा में एक बेहतर दुनिया के निर्माण की शक्ति निहित है। *

किताब: करुणा-समाधान की शक्ति, लेखक: कैलाश सत्यार्थी, अनुवाद: आशुतोष गर्ग, मूल्य: 399 रुपए, प्रकाशक: हार्पर हिंदी, गुप्तग्राम

देश के कोने-कोने का भरोसा

2 करोड़+ मंशरूम पाउडर

आपके नज़दीकी सभी मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
Availability at: www.mynushroomworld.com
Amazon | Flipkart

वज़न बढ़ाने में सहायक

मशरूम एवं 12+ जड़ी-बूटियाँ

10 दिनों में अस्तर देखें

क्योंकि वज़न है, तो वज़नवारी है!

Mushroom World Ayurved & Food Pvt. Ltd. For Trade Enquiry + 91 888 922 3333

धार्मिक-सांस्कृतिक उत्सव

केरल का बहुरंगी महापर्व

ओणम



पर्वोल्लास / धीरज बसाक

यदि उत्तर भारत में होली, रंगों का उत्सव है, पश्चिम भारत में गुजरात का नवरात्र लोकनृत्यों का उत्सव है और पश्चिम बंगाल की दुर्गा पूजा आस्था का विराट आयोजन है, तो कह सकते हैं इन सभी रंगों और उत्सवों के महासंगम जैसा है-ओणम। दस दिनों तक मनाए जाने वाले इस पर्व के दौरान पूरा केरल मानो एक विशाल सांस्कृतिक रंगमंच में बदल जाता है- जहां फूलों की रंगोलियां (पुक्कलम), सर्प नौकाओं की रोमांचक दौड़, कथकली और पुलिकली जैसे लोकनृत्य, पारंपरिक संगीत, सामूहिक भोज (ओणसद्धा) तथा महाबलि की लोकगाथा, ये सब मिलकर एक अद्भुत उत्सवी वातावरण रचते हैं। दस दिनों तक मनाए जाने वाले ओणम का अंतिम उत्सव दिन इस साल 26 अगस्त को संपन्न होगा।

भारतीय संस्कृति की जीवंत पहचान: ओणम केवल एक धार्मिक पर्व नहीं है बल्कि यह केरल की लोककला, सामाजिक समरसता, पारिवारिक एकता और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का महा उत्सव भी है। शायद यही कारण है कि ओणम आज केरल की सीमाओं से निकलकर भारतीय संस्कृति की जीवंत पहचान का हिस्सा हो चुका है, जहां उत्सव केवल मनाया नहीं जाता बल्कि जीवन का हिस्सा बन जाता है।

पर्व मनाने की पौराणिक मान्यता: पौराणिक मान्यता के अनुसार एक समय में केरल में राजा महाबलि का शासन हुआ करता था। महाबलि बेहद न्यायप्रिय, दयालु और प्रजावत्सल शासक थे। कहा जाता है कि उनके राज्य में कोई गरीब नहीं था। किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं होता था और सभी लोग सुखी थे। देवताओं के आग्रह पर भगवान विष्णु ने वामन अवतार धारण कर महाबलि की दयालुता और दानवीरता की परीक्षा लेने

हेतु तीन पग भूमि मांगी। जब महाबलि ने कहा आप नाप लें, तो वामन के अवतार में भगवान विष्णु ने दो पगों में पृथ्वी और आकाश को नाप लिया और अब तीसरे पग के लिए कहीं कोई जगह नहीं थी, तो महाबलि ने अपना सिर प्रस्तुत कर दिया। इस पर भगवान विष्णु ने बलि की भक्ति और त्याग से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया कि वह वर्ष में एक बार अपनी प्रजा से मिलने आया करेंगे। वास्तव में ओणम का उत्सव उनके आगमन की खुशी का उत्सव है। यह पौराणिक कथा केवल धार्मिक आस्था की नहीं बल्कि आदर्श शासन-व्यवस्था, समानता, न्यायप्रियता, त्याग और जनकल्याण का संदेश देती है।

हर दिन होता है कुछ खास: ओणम की शुरुआत में सबसे पहले घरों के आंगन में फूलों की

के साथ चप्पू चलाते हैं। यह केवल प्रतियोगिता नहीं है बल्कि सामूहिकता, अनुशासन और टीम भावना का प्रदर्शन है।

धार्मिक-सामाजिक समभाव का पर्व: ओणम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किसी एक धर्म या एक समुदाय का पर्व नहीं है। केरल में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई और अन्य समुदाय के लोग भी इसे पूरे सम्मान और उत्साह से मनाते हैं। ओणम का महत्वपूर्ण सामाजिक पक्ष यह है कि यह वर्ग, जाति और धर्म की सीमाओं को पीछे छोड़कर लोगों को एक सूत्र में बांधता है। दस दिनों के इस उत्सव में लोग एक-दूसरे के घर जाते हैं, सामूहिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेते हैं और सामूहिक भोज का आनंद उठाते हैं। यही कारण है कि ओणम को सामाजिक समरसता और पारिवारिक एकता का भी महापर्व कहा जाता है।

सबके साथ ओणसद्धा का आनंद: ओणम का जिक्र ओणसद्धा के बिना अधूरा है। केले के पत्ते पर परोसा जाने वाला यह पारंपरिक भोज केवल भोजन नहीं है, यह केरल की पाक संस्कृति का भी उत्सव है। इसमें अनेक प्रकार की सब्जियां, सांभर, अलियल, ओणम, थोरण, अचार, पापड़ और अंत में पायसम परोसा जाता है। इस भोजन की विशेषता यह होती है कि इसमें स्वाद के साथ संतुलित पोषण और सामूहिक भोजन की भावना भी शामिल होती है। परिवार व मित्र एक साथ बैठकर भोजन करते हैं, जिससे आपसी संबंध और मजबूत होते हैं।

कृषि-प्रकृति से संबंध का प्रतीक: ओणम चूँकि वर्षा ऋतु के बाद अच्छी फसल आने की खुशी का पर्व है, इसलिए इसका गहरा संबंध कृषि और प्रकृति से भी है। इस पर्व में की जाने वाली फूलों की सजावट, हरियाली, नई फसल और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति सम्मान इस पर्व की प्रमुख विशेषता है। आज जब पर्यावरण संरक्षण पूरी दुनिया की चिंता बन चुका है, तब ओणम हमें प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। *

माई-बहन के स्नेह के प्रतीक पर्व रक्षाबंधन को लेकर कई पौराणिक-ऐतिहासिक कथाएं प्रचलित हैं। लेकिन हाल के वर्षों में इस रिश्ते को गहन अर्थ देने वाली, कई ऐसी मार्मिक घटनाएं सामने आईं, जो अपने-आप में मिसाल हैं।

दिल को छूने वाले राखी के अनोखे किस्से



शिवम मिस्त्री को राखी बांधती अनामता अहमद



साठ साल बाद अपने भाइयों से मिली बलेश देवी

कुछ अलग
शिखर चंद जैन

रक्षाबंधन सिर्फ एक राखी या रेशमी धागा बांधने की रस्म भर नहीं, बल्कि मन से जुड़ा बंधन होता है। यह सिर्फ सगे भाई-बहन के बीच नहीं, किसी भी उस शख्स या चीज से स्नेह को दर्शाता है, जिससे भाई की अनुभूति मिलती है। ऐसी ही कुछ घटनाओं के बारे में जानिए।

अंगदान से मिला नया भाई: साल 2025 में अंगदान की एक बड़ी ही भावुक सच्ची घटना सामने आई। 9 साल की एक बच्ची रिया को डॉक्टरों ने ब्रेन-डेड घोषित कर दिया था। रिया के माता-पिता ने एक बेहद साहसिक फैसला लेते हुए उसके अंग दान कर दिए। रिया का हाथ ऑर्गन ट्रांसप्लान्ट के जरिए एक लड़की अनामता अहमद को लगाया गया। 8 अगस्त 2025 को रक्षाबंधन के त्योहार पर, अनामता करीब 200 किलोमीटर का सफर तय करके रिया के घर पहुंची। वहां उसने रिया के सगे भाई शिवम मिस्त्री की कलाई पर उसी हाथ से राखी बांधी, जो कभी उसकी बहन का हुआ करता था। हुआ यह कि मुंबई के गोरगांव की रहने वाली 16 वर्षीय अनामता अहमद ने साल 2022 में बिजली के करंट की चपेट में आने से अपना दाहिना हाथ खो दिया था। सितंबर 2024 में गुजरात के वलसाड की 9 वर्षीय मासूम बच्ची रिया मिस्त्री को डॉक्टरों ने ब्रेन-हैमरेज के बाद ब्रेन-डेड घोषित कर दिया था। वलसाड की 'डोनेट लाइफ' एनजीओ की काउंसिलिंग के बाद रिया के माता-पिता ने उसके अंग दान कर दिए। ग्रीन कोरिडोर के जरिए रिया का दाहिना हाथ मुंबई लाया गया और ग्लोबल हॉस्पिटल पर अनामता को ट्रांसप्लान्ट किया गया।

इस अंगदान के बाद अनामता दुनिया की सबसे कम उम्र की 'शोलडर-लेवल हैंड ट्रांसप्लान्ट' प्राप्तकर्ता बनी। इस घटना ने भाई-बहन के रिश्ते की मार्मिक परिभाषा ही नहीं, इंसानियत की एक नई मिसाल भी पेश की।

साठ साल बाद मिली बिछड़ी बहन: यह घटना किसी फिल्मी कहानी जैसी है, जिसमें बचपन में बिछड़ी एक बहन बुढ़ापे में अपने भाइयों से मिली। करीब 60 साल पहले उत्तर प्रदेश के बिजनौर में एक स्थानीय मेले की भीड़ में 9 वर्ष की एक छोटी बच्ची अपने परिवार से बिछड़ गई थी। काफी तलाश के बाद भी उसका कुछ पता नहीं चला और एक अन्य परिवार ने उसे पाला-पोसा। दशकों बाद, सोशल मीडिया और कुछ स्थानीय लोगों की मदद से उसके पुराने परिवार का सुराग मिला। जब वह बुजुर्ग महिला (बलेश देवी) वापस अपने पैतृक गांव लौटी, तो संयोग से उस दिन रक्षाबंधन का ही त्योहार था। 60 साल बाद उसने पहली बार अपने बूढ़े भाइयों की कलाई पर राखी बांधी, जिससे पूरा माहौल बेहद भावुक हो गया। महिला के पोते प्रशांत के प्रयासों और सोशल मीडिया की मदद से पुरानी कड़ियों को जोड़ा गया और दोनों परिवारों की पहचान सुनिश्चित की गई। 9 अगस्त 2025 को यह मामला खबरों में आया।

सैनिकों के लिए लाखों राखियां: देश की सहरदों पर चौबीसों घंटे तैनात रहने वाले भारतीय सेना के जवानों को घर की कमी महसूस न हो, इसके लिए दिल्ली के कई स्कूलों के छात्रों ने मिलकर कुछ वर्ष पहले एक अनोखी मुहिम चलाई

विशेष : रक्षाबंधन 28 अगस्त

थी। बच्चों ने अपने हाथों से तरह-तरह की सुंदर राखियां और उनके साथ सैनिकों के नाम शुभकामना संदेश लिखे। देखते ही देखते यह संख्या 72000 तक पहुंच गई। इसके अलावा तमिलनाडु का करूर जिला इस अभियान का मुख्य केंद्र बना। तमिलनाडु के करूर स्थित भरनी पार्क शिक्षण संस्थान के करीब 3000 छात्र-छात्राओं ने मिलकर 75000 से अधिक हस्तनिर्मित राखियां तैयार की थीं। इन राखियों की विशेषता यह थी कि इनमें से कई पर प्राचीन तमिल ग्रंथ 'तिरुक्कुरल' के श्लोक छपे थे। इस तरह जब करीब 1.5 लाख राखियां एकत्रित हो गईं तो इसकी जानकारी तत्कालीन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को दी गई। उन्होंने 6 अगस्त 2022 को एक विशेष चार्टर्ड विमान की व्यवस्था करवाई। रक्षा मंत्रालय ने इन राखियों को तीनों सेना प्रमुखों (थलसेना, नौसेना, वायुसेना) के जरिए सियाचिन ग्लेशियर, पर्व्यावरण संरक्षण के लिए वृक्ष-रक्षाबंधन: ग्लोबल वार्मिंग के गंभीर संकट और तेजी से कटते जंगलों के बीच पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए देश के कई राज्यों (विशेषकर बिहार, झारखंड और उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों) में 'वृक्ष रक्षाबंधन' की शुरुआत हुई। बिहार में 13 अगस्त 2012 से तत्कालीन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इसकी शुरुआत की थी। तब से यहां रक्षाबंधन के दिन लोग जंगलों और अपने आस-पास के पार्कों में जाते हैं और पेड़ों को बड़े-बड़े रक्षासूत्र (राखियां) बांधते हैं। लोग इन पेड़ों को अपना भाई मानकर इनकी रक्षा करने और इन्हें कभी न काटने का संकल्प लेते हैं। ग्रामीण महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग जंगलों में जाकर देवदार, पीपल, बरगद जैसे बड़े पेड़ों पर हल्दी-मौली और सूती धागों से बनी विशाल राखियां बांधते हैं। उन्हें अपना 'वन-भाई' मानकर उनके संरक्षण की शपथ ली जाती है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई को रोकने के लिए पर्यावरणविदों और वन विभाग के सहयोग से यह मुहिम अब एक बड़े जन-आंदोलन का रूप ले चुकी है। *

सिने डेंड
अशोक जोशी

भारतीय परिवार व्यवस्था में भाई-बहन का रिश्ता अनोखा और प्यारा होता है। बचपन में जहां इसमें नोक-झोंक होती है, वहीं उम्र बढ़ने के साथ यह रिश्ता भावनात्मक सहारे में बदल जाता है। हिंदी फिल्मों ने इस रिश्ते के अलग-अलग रंगों को पर्दे पर प्रस्तुत किया है। कहीं भाई, बहन की रक्षा के लिए सब कुछ छोड़ देता है, कहीं बहन-भाई के लिए वर्षों तक संघर्ष करती है और कहीं दोनों एक-दूसरे के सबसे अच्छे दोस्त बनकर सामने आते हैं।

बीते दौर की फिल्मों में भाई-बहन का रिश्ता: पुरानी हिंदी फिल्मों में भाई-बहन का रिश्ता प्रायः परिवार की भावनात्मक धुरी के रूप में दिखाई देता था। 'छोटी बहन' (1959) और 'राखी' (1962) जैसी फिल्मों ने भाई-बहन के स्नेह, जिम्मेदारी और त्याग को प्रमुखता दी। इन फिल्मों में परिवार केवल कहानी की पृष्ठभूमि नहीं था, परिवार ही कहानी का मूल भाग था। 'बड़ी बहन' (1949), 'मंझली दीदी' (1967) जैसी फिल्मों में भी यह भाव देखने को मिलता है।

सतर और अस्सी के दशक में सामाजिक संघर्ष तथा व्यावसायिक सिनेमा के प्रभाव के साथ भाई की भूमिका अकसर 'रक्षक' के रूप में उभरकर सामने आई। बहन की सुरक्षा और सम्मान के लिए संघर्ष करना भाई के चरित्र की पहचान बन गया। लेकिन इसी दौर में और बाद के दशकों में आई कुछ फिल्मों ने भाई-बहन के रिश्ते के दूसरे पक्षों को भी सामने रखा।

भाई-बहन की कुछ अलग कहानी 'हरे रामा हरे कृष्णा': साल 1971 में देव आनंद और जीतन अमान अभिनीत फिल्म 'हरे रामा हरे कृष्णा' बदलते सामाजिक वातावरण, पश्चिमी प्रभाव, नशे और हिंसा संस्कृति के बीच एक भाई द्वारा अपनी बहन को वापस पाने के प्रयास की मार्मिक कहानी थी। भाई-बहन के बीच बचपन का स्नेह, परिस्थितियों के कारण बिछोह में बदल जाता है और फिर भाई अपनी बहन को उस दुनिया से निकालने के लिए संघर्ष करता है, जिसमें वह फंस चुकी है।

इस फिल्म की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें भाई अपनी बहन का केवल 'रक्षक' नहीं है, वह उसके अतीत, उसकी पीड़ा और उसकी पहचान को समझने की कोशिश करता है। फिल्म का लोकप्रिय गीत 'फूलों का तारों का, सबका कहना है, एक हजारों में मेरी बहना है' तो हिंदी सिनेमा में भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक बन चुका है। आज भी यह गीत राखी के अवसर पर उसी आत्मीयता से सुना जाता है।

संयुक्त परिवार में भाई-बहन का प्यार 'हम

एक सवाल हम सभी को अकसर परेशान करता है कि अगर हम आगे बढ़ना चाहते हैं, प्रगति के साथ सकारात्मक बदलाव करना चाहते हैं तो फिर अपनी जिंदगी में मनचाहा बदलाव क्यों नहीं ला पाते हैं? इसका जवाब हमें ठहरकर अपने भीतर ही खोजना होगा।



आप अपनी जिंदगी में क्यों नहीं बढ़ पा रहे आगे

सेल्फ मोटिवेशन
जोगिंदर रोहिल्ला

हम में बहुत से लोग गोल डिसाइड करते हैं। प्लान बनाते हैं। मोटिवेशन की किताबें पढ़ते हैं। अफमेशन करते हैं और अपने भविष्य को विजुअलाइज भी करते हैं। फिर भी जाने क्यों हम वो अचीव नहीं कर पाते हैं। तब अकसर हम दूसरे लोगों को, भाग्य को और परिस्थितियों को दोष देना शुरू करते हैं। सवाल है आखिर हमें आगे बढ़ने से रोकता क्या है?

सोच को रखें पॉजिटिव: डॉ. जो डिस्पेंजा की किताब 'बीकमिंग सुपरनेचुरल' इस बारे में जिंदगी को थोड़ा अलग नजरिए से देखने के लिए प्रेरित करती है। इसमें व्यक्त किया गया एक विचार खासतौर पर ध्यान खींचता है। इसके अनुसार, हमारे विचार और हमारी भावनाएं (इमोशन) हमारे शरीर से गहराई से जुड़ी हुई होती हैं। विचार, भावना को प्रभावित करता है। भावना फिर विचार को प्रभावित करती है। और यह चक्र चलता रहता है। बार-बार ऐसा होने पर यह हमारे लिए जाना-पहचाना बन जाता है। हमारा दिमाग उस पैटर्न को पहचानने लगता है और हम बिना सोचे उसी तरह प्रतिक्रिया देने लगते हैं। वही डर, वही चिंता, वही प्रस्ट्रेशन और वही आत्म-संदेह। वास्तव में हम अपनी जिंदगी को सचेत होकर नहीं जी रहे होते हैं। हम सिर्फ वही दोहरा रहे होते हैं, जो हमारे लिए जाना-पहचाना बन चुका है। इसी विचार को दूसरी कुछ किताबें भी अलग-अलग तरीके से सामने रखती हैं। शक्ति गॉवेन की 'क्रिएटिव विजुअलाइजेशन' में बताया गया है कि जब हम अपने लक्ष्य और उस जीवन की एक स्पष्ट तस्वीर अपने मन में बनाते हैं, तो वह हमारी सोच और हमारे कार्र करने के तरीके को प्रभावित कर सकती है।

'द सीक्रेट' किताब ने भी जीवन में सफल होने के लिए विचारों, विश्वास और उम्मीदों के प्रभाव को लोकप्रिय बनाया। वहीं नेपोलियन हिल की 'थिंक एंड

ग्री रिच' किताब, इच्छा, कल्पना और स्पष्ट उद्देश्य की ताकत पर जोर देती है। सबका सार यही है कि हम जिस दिशा में बार-बार अपने विचार और एनर्जी लगाते हैं, वह हमारी जिंदगी को प्रभावित करने लगती है।

अपना कॉन्सेप्ट रखें क्लीयर: एक जरूरी बात यह भी है कि सिर्फ सकारात्मक सोच काफी नहीं है। आप सुबह कह सकते हैं, 'मेरी जिंदगी बदल रही है।' लेकिन अगर अगले दस घंटे आप चिंता करते रहें, शिकायत करते रहें, खुद पर संदेह करते रहें और हर चीज के गलत होने की कल्पना करते रहें, तो उस सोच का कोई फायदा नहीं होगा। सवाल यह है कि आप वास्तव में खुद के किस रूप की प्रैक्टिस कर रहे हैं? उस व्यक्ति की, जो अब तक दुख, डर को दोहराता आ रहा है या उस इंसान की, जो आप बनना चाहते हैं?

बदलाव के प्रति रहें दृढ़: ट्रांसफॉर्मेशन कुछ हद तक एक तितली की लाइफ साइकिल जैसा होता है। एक कैटरपिलर को तितली बनने के लिए अपने पुराने रूप को छोड़ना पड़ता है। वह हमेशा कैटरपिलर बने रहकर तितली नहीं बन सकता। शायद इंसानों के साथ भी कुछ ऐसा ही है। हमारी बाहरी जिंदगी बदलने से पहले कई बार हमारे भीतर कुछ बदलना जरूरी होता है। इसलिए जब भी लगे कि मैं किसी नकारात्मक विचार के चक्र में जा रहा हूँ तो रुककर खुद से एक सवाल पूछिए, 'क्या यह विचार मुझे उस इंसान के करीब ले जा रहा है, जो मैं आगे बनना चाहता हूँ?'

एनर्जी को दें सही दिशा: एक पुरानी बौद्ध शिक्षा हमें याद दिलाती है, 'हम जैसा सोचते हैं, धीरे-धीरे वैसे ही बनते जाते हैं।' आपका बदलाव उस समय शुरू होगा, जब आप उन विचारों, भावनाओं और आदतों को पहचानना शुरू करेंगे, जो आपको पीछे खींच रहे हैं और सचेत होकर उस इंसान की प्रैक्टिस करना शुरू करेंगे, जो आप बनना चाहते हैं। अगर आप अपनी जिंदगी बदलना चाहते हैं, तो शुरुआत नए विचार और नई भावना से करनी होगी। आपका बदलाव बाहर नहीं आपके भीतर, आपके विचार में ही छिपा हुआ है। *



माई-बहन के शाश्वत रिश्ते को केन्द्र में रखकर या इसके इर्द-गिर्द बुनी गई कहानियों और वास्तविकताओं पर हर दौर में हिंदी फिल्में बनती रही हैं। माई-बहन के स्नेह भरे रिश्ते के विविध आयामों को दर्शाती कुछ फिल्मों पर एक नजर।

हर दौर की फिल्मों में रची गई माई-बहन के रिश्ते की दास्तान



साथ-साथ हैं': नब्बे के दशक में सिनेमा ने संयुक्त परिवार और भाई-बहन के रिश्ते को अधिक घरेलू और सहज रूप में प्रस्तुत किया। 'हम साथ-साथ हैं' (1999) में भाई-बहनों के बीच प्रेम, विश्वास और त्याग कहानी का महत्वपूर्ण भाव है। यहां भाई-बहन केवल परिवार के सदस्य नहीं, बल्कि एक-दूसरे के भावनात्मक ताकत के रूप में दिखाए गए हैं। फिल्म में सभी भाई अपनी बहन का पूरा खयाल रखते हैं, उसे अपेक्षित मान और



को बहुत प्रभावी तरीके से सामने लाता है। आधुनिक शहरी संदर्भ में भाई-बहन का रिश्ता 'दिल धड़कने दो': साल 2015 में रिलीज फिल्म 'दिल धड़कने दो' में भी भाई-बहन का रिश्ता आधुनिक उच्चवर्गीय शहरी परिवार के संदर्भ में दिखाई देता है। दोनों अपने परिवार की अपेक्षाओं और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच संघर्ष करते हुए एक-दूसरे के भरोसेमंद भावनात्मक ताकत के साथी बने रहते हैं। यह फिल्म बदलते दौर की बदलती पारिवारिक संरचना के बीच भाई-बहन के भरोसे, स्नेह और अपनेपन को सामने लाती है। भाई के लिए बहन के संघर्ष की कहानी दिखाती 'सरबजीत': 'सरबजीत' (2016) में भाई-बहन के रिश्ते का एक बिल्कुल अलग रूप दिखाई देता है। दलवीर कौर अपने भाई सरबजीत के लिए वर्षों तक संघर्ष करती है। यहां बहन किसी कमजोर या आश्रित पात्र के रूप में नहीं, बल्कि संघर्ष की अगली पंक्ति में खड़ी एक दृढ़ महिला के रूप में सामने आती है। यह फिल्म इस बात को रेखांकित करती है कि भाई-बहन का रिश्ता आवश्यकता पड़ने पर जीवन भर के संघर्ष का संबल बन सकता है। *



आदर देते हैं।



कौर अपने भाई सरबजीत के लिए वर्षों तक संघर्ष करती है। यहां बहन किसी कमजोर या आश्रित पात्र के रूप में नहीं, बल्कि संघर्ष की अगली पंक्ति में खड़ी एक दृढ़ महिला के रूप में सामने आती है। यह फिल्म इस बात को रेखांकित करती है कि भाई-बहन का रिश्ता आवश्यकता पड़ने पर जीवन भर के संघर्ष का संबल बन सकता है। *

सुरिखल वक्त में भाई के साथ खड़ी किसी की कहानी 'माय ब्रदर... निरिखल': नई सदी में भाई-बहन के रिश्ते की परिभाषा और विस्तृत हुई। अब बहन केवल भाई की सुरक्षा की जिम्मेदारी वाला पात्र नहीं रही। वह उसकी मित्र, विश्वासपात्र और संचर्ष की साथी भी बनी। 'माय ब्रदर... निरिखल' (2005) इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है। फिल्म में बहन अपने भाई के कठिन दौर में उसके साथ जिस मजबूती से खड़ी रहती है, वह भाई-बहन के रिश्ते में समानता और भावनात्मक साझेदारी

पर्दे से बाहर भी बने माई-बहन के रिश्ते

फिल्मी पर्दे पर कलाकर एक-दूसरे के भाई-बहन बने नजर आते हैं, जबकि अकसर वास्तविक जीवन में उनके बीच ऐसा कोई रिश्ता नहीं होता। इसके उलट फिल्मी दुनिया से जुड़ी कुछ हस्तियों ने पर्दे के बाहर भाई-बहन का रिश्ता कायम किया और इस आत्मीय रिश्ते को ताउम्र निमाया भी। महान गायिका लता मंगेशकर के जीवन में ऐसे आत्मीय रिश्तों की विशेष जगह थी। उन्होंने कई कलाकारों के साथ उनकी पारिवारिक आत्मीयता थी। दिलीप कुमार के साथ उनका संबंध विशेष रूप से भावपूर्ण था। दिलीप कुमार उन्हें बहन मानते थे और लता जी भी उन्हें अपने भाई का स्थान देती थीं। राखी के अवसर पर दोनों का यह संबंध सार्वजनिक रूप से भी चर्चित रहा। ऐसे ही संगीतकार मदन मोहन और गायक मुकेश को भी लता जी अपना भाई मानती थीं। इन दोनों को लता जी 'भैया कडकर बुलारी' थीं और उन्हें राखी बांधती थीं।

